ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

नशामुक्ति विशेषांक

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 20

वर्ष : 30 | वैशाख-ज्येष्ठ | वि0स0 2075 | मई 2018 | अंक : 5

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून | वजन: 50 ग्राम

नशे को कहे ना

आइये

नशे के खिलाफ इस मुहिम में

आप और हम

साथ मिलकर उत्तराखण्ड सरकार की जन विरोधी आबकारी नीति का विरोध करें और युवा पीढ़ी को नशे की लत से बचायें

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद | अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

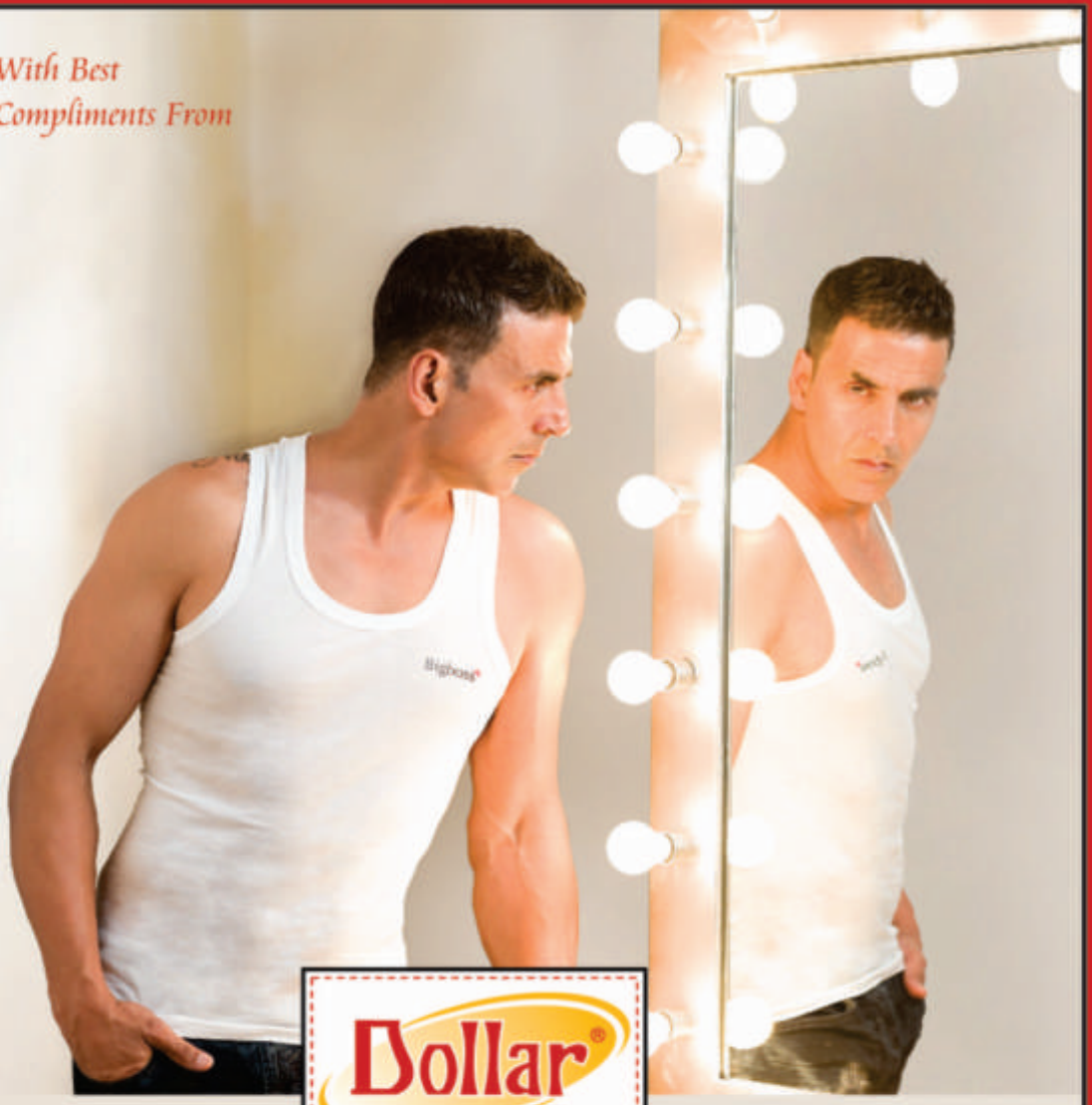

With Best
Compliments From
Dollar®
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

ओ३म्

पवमान

वर्ष–30 अंक–5

वैशाख–ज्येष्ठ 2075 विक्रमी मई 2018
सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119 दयानन्दाब्द : 194

★

–: संरक्षक :–
स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

★

–: अध्यक्ष :–
श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री
मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–
प्रेम प्रकाश शर्मा
मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–
स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–
कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री
अवैतनिक
मो. : 9336225967

★

–: सम्पादक मण्डल :–
अवैतनिक
आचार्य आशीष दर्शनाचार्य
मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,
तपोवन मार्ग, देहरादून–248008
दूरभाष : 0135–2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com
Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत		3
सूर्य अस्त उत्तराखण्ड मस्त	डा० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
नशे से पतन की ओर बढ़ता देश और समाज	मनमोहन कुमार आर्य	8
वीर सावरकर की अण्डमान की कालापानी जेल से मुक्ति की यथार्थ कथा	डा० नवदीप कुमार एवं श्री मनमोहन कुमार आर्य	15
हमारा यह जन्म हमारे पूर्वजन्म का पुनर्जन्म....	मनमोहन कुमार आर्य	12
आश्रम में चिकित्सालय का शुभारम्भ	मनमोहन कुमार आर्य	17
तुम क्या हो	महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती	20
रहस्योद्घाटनः हनुमान जन्म	श्री ईश्वरी प्रसाद प्रेम	21
Man And His Four Wives	Shri S.K. Chibber	23
धर्म का पांचवा लक्षण शौच	डॉ० प्रियंवदा वेदभारती	24
धर्म का छटा लक्षण इन्द्रियनिग्रह	डॉ० प्रियंवदा वेदभारती	25
कर्म–फल कैसे मिलेगा और कब	महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज	26
दानदाताओं की सूची		27
आचार्य राजवीर शास्त्री और उनके द्वारा प्रणीत योगदर्शन भाष्य की विशेषताएं	डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	28

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1.	कलर्ड फुल पेज	रु. 5000/– प्रति माह
2.	ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज	रु. 2000/– प्रति माह
3.	ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज	रु. 1000/– प्रति माह

पवमान पत्रिका के रेट्स

1.	मासिक मूल्य (1 पत्रिका)	रु. 20/– एक प्रति
2.	वार्षिक मूल्य (12 प्रतियाँ प्रति वर्ष)	रु. 200/– वार्षिक
3.	15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य	रु. 2000/–

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

देवभूमि में कर रहे हैं असुरों के काम

हम भारत के जिस उत्तरी भाग को उत्तराखण्ड या देवभूमि कहते हैं, इस शब्द की व्याख्या करते हैं। 'देव' शब्द या पद 'दिवु' धातु से बना है। दिव्य गुण, कर्म और स्वभाव वाले विद्वानों को 'देव' कहा जाता है। निरुक्त के अनुसार ''देवो दानाद् वा'' अर्थात् विद्या का दान करने से विद्वान् देव कहलाते हैं। ये विद्वान् सत्याचरण वाले, बहुश्रुत और अनेक विद्याओं में पारंगत होने चाहिए। 'देवभूमि' का इस सन्दर्भ को देखते हुए अर्थ हुआ– ऐसी भूमि जिसमें बहुश्रुत और अनेक विद्याओं में पारंगत गुणवान् व्यक्ति निवास करते हों। महात्मा गांधी जैसे सन्तों ने देश की स्वतंत्रता की प्राप्ति के समय यह संकल्प लिया था कि इस राष्ट्र से नशे की सदा के लिए मुक्ति करनी है। **ब्रिटिश भाासनकाल में भाराब से होने वाली राजस्व आय के बदले में विभिन्न प्रान्तीय सरकारों ने अपने–अपने प्रदेश में बिक्री कर अधिनियम बनाये और उनकी भूमिका में यह स्पश्ट रूप से लिखा कि यह कर मद्यपान को समाप्त करने के लिए भाराब से मिलने वाले कर के स्थान पर लगाया जा रहा है।** वर्तमान सरकार ने अपने गठन के कुछ समय बाद 18 अप्रैल, 2017 को कुछ निर्णय लिए थे, जिनमें शराब की दुकानों को पर्वतीय नौ जिलों में छः घण्टे–12 बजे दोपहर से 6 बजे सायं तक खुलने के आदेश किए गए थे। इस आदेश में वित्तीय वर्ष 2017–18 के लिए 2310 करोड़ राजस्व का लक्ष्य निर्धारित किया गया था।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड द्वारा सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेशजी के नेतृत्व में माननीय मुख्य मंत्री उत्तराखण्ड, श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत से दिनांक 30 अक्टूबर, 2017 को भेंट कर प्रदेश में जारी आबकारी नीति का घोर विरोध करते हुए शराबबन्दी किए जाने के बारे में एक ज्ञापन दिया था। इस पर मुख्य मंत्री महोदय द्वारा सम्यक विचार करने का आश्वासन दिया गया परन्तु इसके ठीक विपरीत उत्तराखण्ड शासन ने दिनांक 7 अप्रैल, 2018 को जो आबकारी नीति घोषित की है, उसमें अब विदेशी शराब और वाइन मोहल्ले की परचून की दुकान में भी उपलब्ध हो सकेगी। उत्तराखण्ड में एक कहावत सर्वविदित है– **''सूर्य अस्त उत्तराखण्ड मस्त''** सरकार की इस नीति का समाज के विभिन्न वर्गों, विशेषकर बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ेगा, इस पर कौन विचार करेगा? आर्यसमाज ही केवल ऐसी संस्था है जो इन कुकृत्यों का घोर विरोध करती है। सरकार द्वारा लिया गया यह निर्णय न केवल हमारे जन प्रतिनिधियों अपितु प्रदेश की जनता के प्रति घोर विश्वासघाती और सारे समाज के लिए हानिकारक है। पर्वतीय इलाकों में अधिकांश सड़क दुर्घटनाएं मद्यपान करके वाहन चलाने से होती हैं, जिनमें न केवल इन नशेड़ियों अपितु हजारों निर्दोष लोगों की मृत्यु हो जाती है। आर्यसमाज ने सदैव समाज और देश का अहित करने वाले कार्यों का विरोध करते हुए लोगों के जीवन को सुधारने का बीड़ा उठाया है। नशा एक ऐसा अभिषाप है जिससे समाज को मुक्त कराना हम आर्यों का परम कर्त्तव्य है। हमें नशामुक्ति के लिए एक अभियान चलाकर कार्य करना होगा। जहां प्रान्तीय सरकारों को शराब बन्दी कराने के लिए राजी करना होगा, वहीं युवको और भावी पीड़ी के बच्चों में नैतिक शिक्षा का प्रचार–प्रसार करते हुए ही देवभूमि को असुरों के कर्मों से बचाया जा सकता है।

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

वेदामृत

हे पुरुष! तू ऊपर उठ।

उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवांतु ते दक्षताति कृणोमि।
आ हि रोहेममृतं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमा वदासि।।
-अथर्वद्द 8 । 1 । 6

ऋषि:- **ब्रह्मा।। देवता-आत्मा:।।** छन्द:-**त्रिष्टुप्।।**

विनय-हे पुरुष! तू इस सृष्टि में मुरझाया हुआ, गिरी हुई तबीयत से क्यों रहता है? तू उठ! तुझे तो दिनों-दिन उन्नत होना चाहिए। तू अपने-आपको विकसित करने के लिए ही संसार में आया है। तुझे जीवन द्वारा आत्मा की शक्तियों का प्रकाश करना है। तेरे जीवन को, प्राण को, बल से संयुक्त करता हूँ। तेरे प्राण में महाबल भरा हुआ है, इस बल को पाकर लगातार तेरा उत्थान, उन्नति होती जाए। अपने-आपको पतित करने का, या हिम्मत हारने का क्या काम है? इस बल को तू जगाता जाएगा तो तेरा 'जीवातु' (जीवन) एक उत्तरोत्तर आनन्ददायक यात्रा हो जाएगी, अत: तू इस 'दक्ष' से युक्त होकर अब इस शरीररूपी रथ पर सवार हो जा। अभी तक तू इस पर सवार नहीं था, किन्तु शायद यह शरीर तुझ पर सवार रहा है। उठ, इस शरीर का तू अधिष्ठाता है, यह रथ तेरा है। इसे अपने अधीन रखकर चला तो पता लगेगा कि यह रथ कितने सुख से चलनेवाला है। तब शरीर के क्लेश, रोग आदि का तुझ पर प्रभाव न हो सकेगा। प्रत्युत, तेरे प्रभाव से यह शरीर रोगादि से रहित होकर स्वस्थ हो जाएगा। यही नहीं, यदि तू इस रथ का पूरा सवार, रथी अधिष्ठाता हो जाएगा तो तू चाहे तो तेरा अमर आत्मा उस प्राण-बल द्वारा इस रथ को अमृत भी बना सकता है; सब अणिमादि सिद्धियाँ और 'काय-संपत्' इसमें प्रकट हो सकती हैं। इसीलिए कहता हूँ कि तू उठ! इस सुखमय अमृत-रथ पर चढ़ जा और इस द्वारा उत्तरोत्तर आत्मविकास करता हुआ उन्नत-से-उन्नत होता जा। इस बल को पा लेने के बाद, इस रथ पर चढ़ जाने के बाद, कभी 'क्रमिक ह्रास' का नियम नहीं लग सकता है। वह प्राण-बल तुझमें दिनोंदिन बढ़ता ही जाएगा। स्वभावत: वृद्धावस्था के आने पर भी तेरी शक्ति में ह्रास नहीं आना चाहिए। उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ प्राण-बल तो वृद्धावस्था में पूर्ण विकसित हो जाता है, 'वसु' और 'रुद्र' अवस्था से उठकर उस समय प्राण 'आदित्य'-रूप हो जाते हैं। जैसे प्राण-भण्डार आदित्य सब जगह अपनी किरणों को फैलाता है, उसी प्रकार वृद्धावस्था में तू अक्षीण-शक्ति होकर अपने विशाल अनुभव-ज्ञान को सब मनुष्य-समाज के लिए प्रदान करता रह।

शब्दार्थ- पुरुष:=हे जीव! **ते उद्यानम्**=तेरा उत्थान ही हो, उन्नति ही हो; **न अवयानम्**=नीचे पतन कभी नहीं। **ते जीवातुम्**=तेरे जीवन को **दक्षतातिम्**=बल से युक्त **कृणोमि**=करता हूँ। **इमम्**=इस विद्यमान **अमृतम्**=अमृतयुक्त **सुखम्**=सुखकारी **रथम्**=रथ पर **हि**=निश्चय से **आरोह**=तू चढ़ जा। **अथ**=फिर **जिर्वि:**=जीर्ण होकर, बुढ़ापे में भी **विदथम्**=ज्ञान का **आवदासि**=प्रचार करता रह।

सूर्य अस्त उत्तराखण्ड मस्त

–डा० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

सृष्टि के आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य को जीवन में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसके मार्ग निर्देशन के लिए वेदज्ञान दिया। ऋग्वेद के एक मंत्र में कहा गया है–

सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुः तासामेकमिदभ्यं हुरो गात्।

आर्योर्हस्कम्भ उपमस्य नीडे पथां विसर्गे धरूणेशु तस्थौ।। (ऋग्0 10.5.6)

इस मंत्र का भावार्थ यह है कि परस्त्रीगमन, ब्रह्महत्या, गर्भपात, निन्दित कार्यों में बार–बार लगे रहना, मद्यपान करना, चोरी करना, और असत्यभाषण इन पापों को करने वाले दुष्टों का सहवास भी न करना सप्तमर्यादा कहलाती हैं। इनमें से एक भी मर्यादा का उल्लंघन करने वाला पापी कहलाता है। जो व्यक्ति धैर्य से हिंसादि इन समस्त पापों को छोड़ देता है, वह निःसन्देह रूप से जीवन में आत्मोन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर हो सकता है।

शतपथ ब्राह्मण में महर्षि याज्ञवल्क्य ने लिखा है– ''अनृतं पाप्मा तमः सुरा'' अर्थात् शराब असत्य, पाप और अन्धकार की जड़ है। आयुर्वेद के ग्रन्थ शांखधर संहिता में वर्णित किया गया है– ''बुद्धि लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी तदुच्यते'' अर्थात् जो पदार्थ बुद्धि को विलुप्त कर देता है, उसे मदकारी कहते हैं। संस्कृत में मदिरा को 'मद्य' कहा जाता है क्योंकि इससे बुद्धि नष्ट हो जाती है। बुद्धि के नष्ट हो जाने पर आत्मा, चरित्र, सम्मान, धन, परिवार और समाज का भी विनाश होता है। जिस द्रव्य से मनुष्य की बुद्धि मन्द पड़ कर क्रियाविहीन हो जाती है और उसे नशे की हालत में ला देती है, वह मद्यपान कहलाता है। सुरा की परिभाषा मनुस्मृति में इस प्रकार दी गई हैः–

सुरा वै मलमन्नानां पाप्मा च मलमुच्यते।
तस्मात् ब्राह्मण–राजन्यौ वैश्यश्च न सुरां पिबेत्।।

अर्थात् अन्नों के मल को सुरा कहते हैं और मल को पाप कहा गया है। इस कारण सुरापान का अर्थ पाप को पीना है। अतः ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को शराब नहीं पीनी चाहिए। इस का अर्थ यह नहीं है कि शूद्र आदि को शराब पीने की अनुमति मिली हुई है। शास्त्रों में जो निषिद्ध कार्य हैं, वे सभी के लिए समान रूप से निषिद्ध हैं। मनुस्मृति में ही मद्य के बारे में कहा गया हैः–

चित्त भ्रान्तिर्जायते मद्यपानाद् भ्रान्तं चित्तं पापचर्यामुपैति।

पापं कृत्वा दुर्गतिं यान्ति मूढास्तस्मान्मद्यं नैव पेयं न पेयम्।।

अर्थात् मद्य पीने से चित्त भ्रान्त हो जाता है और चित्त के भ्रान्त होने पर मनुष्य पाप कर्म कर डालता है। पाप कर्म करके मूर्ख लोग दुर्गति को प्राप्त होते हैं। इसलिए मनुष्य को कभी मद्यपान नहीं करना चाहिए।

मनुस्मृति में यह भी कहा गया हैः– ''मद्यपे.. नास्ति तत्त्वचिन्ता'' अर्थात् मद्यपान करने वाले को वास्तविक तत्त्व का ज्ञान नहीं हो सकता है।

और कहा हैः– **''न पानेन सुरां जयेत्''** अर्थात् अधिक मद्य को पीकर कोई शराब के दुर्व्यसन को नहीं जीत सकता है, क्योंकि अधिक शराब पीने से वह व्यक्ति दुर्व्यसनों और रागों में फंसता चला जायेगा।

शराब के बारे में संस्कृत साहित्य में एक रोचक क्था मिलती है। आज तो शराब बोतलों में रखी जाती है परन्तु प्राचीन काल में यह घड़ों में रखी जाती थी। एक गणिका सिर पर घड़ा रखे जा रही थी। मार्ग में खड़े एक सिपाही ने उस गणिका से पूछा कि वह उस घड़े में क्या ले जा रही थी। गणिका ने पहले तो बताया कि इसमें उसका पेय पदार्थ है, परन्तु जब सिपाही ने उसे सही–सही पदार्थ बताने पर बल दिया तो उसने कहाः–

मदः प्रमादः कलहश्च निद्रा, बुद्धिक्षयो धर्मपिर्यश्च।

सुखस्य कन्था दुःखस्य पन्था, अष्टौ अनर्थाः वसन्तीह कर्के।।

अर्थात् वह इस सुरापात्र में आठ अनर्थ एक साथ लिए जा रही थी, वे थे– १. मद (नशा) २. प्रमादः (आलस्य) ३. कलह (लड़ाई–झगड़ा), ४. निद्रा (नींद), ५. बुद्धिक्षय (बुद्धि का नाश), ६. धर्मविपर्यय (अधर्म और अनर्थ का मूल), ७. सुखस्य कन्था (सुख का विनाश), ८. दुःखस्य पन्था (दुःखदायक मार्ग)। इस प्रकार मदिरा उपरोक्त इतने सारे दुःखों और अनर्थों को उत्पन्न करती है।

शराब की हानियों के सम्बन्ध में विभिन्न महापुरुषों के कथनः–

रवीन्द्रनाथ टैगोर– विश्वकवि टैगोर ने लिखा है कि ''जिस प्रकार किसी भी राष्ट्र व जाति तथा समाज को उन्नत बनाने के लिए उत्तम साहित्य संजीवनी बूटी है, उसी प्रकार किसी भी जाति को निस्सार और निस्तेज बनाना हो तो उस राष्ट्र व जाति में शराब की आदत डाल देनी चाहिए।''

महात्मा गांधी– आपने कहा है कि ''शराब सभी पापों की जननी है। वास्तव में शराब एक ऐसा पदार्थ है जो मनुष्य की चिन्तन शक्ति को नष्ट करता है।''

शराब से होने वाली हानियां–

१. **शराब मनुष्य को अपराधी बनाती है**– साहित्य में कहा गया है कि मनुष्य का चेहरा उसके मन व आत्मा का दर्पण होता है। शराबी के चेहरे को यदि हम ध्यान से देखते हैं तो वह घृणास्पद, निकृष्ट, असन्तुलित और खूंखार नजर आने लगता है। उसका शरीर और वाणी पर कोई नियंत्रण नहीं रहता है। वह समाज से तिरष्कृत हो जाता है। विवेक नष्ट हो जाने से उसे अच्छे–बुरे का कोई आभास नहीं रहता है ओर वह अनाप–शनाप बकने लगता है और लड़ाई–झगड़ा, मार–पीट आदि करता है। वह व्यभिचार, बलात्कार, चोरी, हेराफेरी, गबन आदि अपराधों में लिप्त हो जाता है। इस प्रकार अपराधी बनकर अपराध की दुनिया में प्रवेश कर जाता है।

२. **शराब पापों की जड़ है**– हम देखते हैं कि संसार में दिन–प्रतिदिन हत्या, अपहरण, बलात्कार, आदि क्रूरतम अपराध बढ़ रहे हैं। इसका मुख्य कारण लोगों के द्वारा शराब, स्मैक, हेरोइन, चरस, गांजा, अफीम आदि का सेवन करना है आजकल के नौजवान तो शराब के नशे से सन्तुष्ट नहीं होते हैं और जीवन की समस्याओं से

भागने या आनन्द की प्राप्ति के लिए एक प्रकार ड्रिंक चाहते है, जो उन्हें नशीली ड्रग्स और इन्जैक्शन्स में मिलता है। इन नशीले इन्जैक्शन्स से उनका शरीर ही नष्ट नहीं होता अपितु एड्स जैसी भयानक बीमारी भी लग जाती है। हमारे देश के उत्तर–पूर्वी व अन्य कई राज्यों में यह रोग बढ़ता जा रहा है। शराब के नशे से मनुष्य पापी, दानव, पिशाच, शैतान और राक्षस बन जाता है।

३. **गृहस्थ को नष्ट करती है शराब**– शराब पीकर व्यक्ति बात–बात पर क्लेश करता है। वह पत्नी, माता–पिता और बच्चों की उपेक्षा ही नहीं करता अपितु उनके साथ गाली–गलौज और मार–पीट भी करने लगता है। बच्चे भी इस दुर्व्यवहार से मानसिक विकृतियों के शिकार हो जाते हैं। शराबी का नौकरी और व्यवसाय में मन नहीं लगता और कार्य न करने से उसकी नौकरी चली जाती है और व्यवसाय नष्ट हो जाते हैं। ऐसे में उसकी आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो जाती है कि न केवल उसकी गृहस्थी नष्ट नहीं होती है अपितु उसकी पत्नी और बच्चों को आत्महत्या तक करने के लिए विवश होना पड़ता है। कई बहनों को लोगों के घरेलू कार्य करके अपना जीवन यापन करना पड़ता है। कुछ बहनें अपना शरीर तक बेचने को विवश हो जाती हैं। इस दुर्व्यसन के ऐसे भयावह परिणाम हैं कि यह गृहस्थ जीवन को पूरी तरह से नष्ट कर देता है।

४. **समाज में सम्मान को नष्ट करती है शराब**– कई पियक्कड़ यह तर्क देते हैं कि वे सामाजिकता बनाये रखने के लिए पीते हैं। यह उनका भ्रम है। पंजाब प्रान्त पुलिस के एक महानिदेशक ने एक पार्टी में शराब पीकर एक वरिष्ठ आइ0ए0एस0 अधिकारी महिला जिसका पति भी वरिष्ठ आइ0ए0एस0 था और उसी पार्टी में उपस्थित था, शराब पीकर छेड़ा, जिसके फलस्वरूप न केवल उसकी देश में हर जगह घोर निन्दा हुई अपितु उसे न्यायालय द्वारा कई वर्षों का कारावास दिया गया, जिसकी सम्भवतः अपील लम्बित है। वह व्यक्ति अन्यथा अत्यंत प्रतिभाशाली था और पंजाब प्रान्त में उग्रवाद का सफाया करने में उसकी अग्रणीय भूमिका रही थी। उसे समाज में जो सम्मान मिलना चाहिए था, उससे वह वंचित रहा और उसे घोर अपमान का सामना करना पड़ा। इसका मुख्य और एकमात्र कारण शराब है। इस प्रकार यह समाज में व्यक्ति के सम्मान को नष्ट कर देती है।

५. **दुर्घटनाओं का कारण है शराब**– मोटर वीकल अधिनियम के अन्तर्गत शराब पीकर वाहन चलाना वर्जित है परन्तु हम देखते हैं कि प्रायः लोग शराब पीकर वाहन चलाते हैं। ऐसी दशा में नियंत्रण की शक्ति न रहने के कारण गाड़ी किसी अन्य वाहन या खम्बे आदि से टकरा जाती है। कई बार पैदल यात्री उसकी चपेट में आकर घायल हो जाते हैं या मृत्यु के आलिंगन में पहुंच जाते हैं।

६. **शराब आत्मा और बुद्धि और शरीर का नाश कर मनुष्य को पशु बना देती है**– बुद्धि भ्रष्ट हो जाने के बाद मनुष्य दो पैरों वाला पशु बन जाता है क्योंकि बुद्धि ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है। यदि यह बुद्धि

ही लुप्त हो जाये तो वह एक क्रोधी, कामी स्वार्थी, हिंसक पशु बन कर रह जाता है जिसमें न निर्णय करने की शक्ति होती है और न ही भले–बुरे का विवेक होता है। शराब अधिक और रोजाना पीने से मनुष्य के गुर्दे ओर लीवर खराब हो जाते हैं। वह लीवर सीरोसिस आदि भयानक रोगों से पीड़ित होकर अन्ततोगत्त्वा मौत के आगोश में समा जाता है।

उत्तराखण्ड में एक कहावत सर्वविदित है– ''सूर्य अस्त उत्तराखण्ड मस्त''। उत्तराखण्ड सरकार की नई नीति के अनुसार घर के पास ही परचून की दुकान में शराब उपलब्ध होने से पहले से ही इस नशे में आकण्ठ डूबे हुए प्रदेशवासियों में शराब की लत और बढ़ेगी, यहां तक कि बच्चे और युवा भी आसानी से इसे प्राप्त कर अपने चरित्र को नाश की ओर ले जाएंगे। उपरोक्त समस्त तथ्यों पर विचार करने के उपरान्त हम यह पाते हैं कि मद्यपान करना मनुष्य के लिए विनाशकारी है। यदि जीवन में सुचिता और श्रेष्ठता रखनी है तो शराब जैसी विनाशकारी वस्तु से सदैव दूर रहना चाहिए। हमारा यह दायित्त्व है कि समाज में व्याप्त इस दुर्व्यसन के विरुद्ध प्रचार कर, इसे समाप्त करें। सरकारों को भी नशामुक्ति सम्बन्धी नीति अपनाने के लिए बाध्य करना होगा तभी हम इस राष्ट्र और उत्तराखण्ड को वास्तव में एक देवभूमि बना सकेंगे और इस लेख के शीर्षक में दिए गए अभिशाप से भी मुक्त कर पाऐंगे।

विनम्र अनुरोध

सम्मानीय बहनों और भाईयों

आप सभी भाई बहन जब तपोवन आश्रम देहरादून में पधारते हैं तो आश्रम की भव्यता और व्यवस्थाओं को देखकर आप अनुभव करते होंगे कि आश्रम बहुत धन सम्पन्न है और आश्रम को किसी अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता नहीं है लेकिन आश्रम की आर्थिक स्थिति से वही लोग विज्ञ हैं जो दिन प्रतिदिन आश्रम के कार्यकलापों को पूर्ण करते हैं। वर्तमान स्थिति में आश्रम के कर्मचारियों को प्रतिमाह वेतन वितरण करने, पवमान मासिक पत्रिका की प्रिंटिंग का भुगतान करने, गौशाला में गायों के लिए आवश्यक भूसे एवं चोकर-दाना आदि का भुगतान करने एवं आश्रम के भवनों की मरम्मत आदि पर होने वाले व्यय की प्रतिपूर्ति करने की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है क्योंकि आश्रम की अपनी कोई भी इनकम नहीं है केवल दान से ही सभी प्रकल्प पूर्ण किये जाते हैं। यदि आप अनुभव करते हैं कि आश्रम भोजन व्यवस्था और अधिक बेहतर की जाय तथा आश्रम का रख-रखाव और अधिक सुन्दर हो तो आपको आश्रम की सहायता के लिए आगे आना चाहिए। यदि आप किसान अथवा व्यापारी है तो आश्रम की सहायता गेहूं, चावल, चीनी, दालें, सरसो तेल, सूजी, बेसन, देसी घी, आदि दान रूप में दे सकते हैं। आप आश्रम के एक कर्मचारी का वेतन रूपये 8000 प्रतिमाह दे सकते हैं अथवा एक गाय के चारे पर होने वाले व्यय रूपये 5000 गौशाला के लिए दान कर सकते हैं इसी प्रकार पवमान पत्रिका के लिए विज्ञापन देकर आप पत्रिका को सुचारू रूप से प्रकाशन में सहायता कर सकते हैं। हमारी हार्दिक इच्छा है कि आप सभी लोगों की कृपा से आश्रम में भोजन की व्यवस्था, कमरो की व्यवस्था आदि में वांछित सुधार किए जाय आशा है आप हमारी प्रार्थना पर विचार करके इस सम्बन्ध में अपना सुझाव एवं सहयोग अवश्य प्रदान करेंगे।

ओ३म्

नशे से पतन की ओर बढ़ता देश और समाज

–मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य इस संसार की सबसे श्रेष्ठ कृति है जिसे सर्वोत्कृष्ट, ज्ञानवान, पवित्र व धार्मिक स्वभाव वाले परमेश्वर ने अपने सर्वज्ञ व परमोत्कृष्ट ज्ञान से बनाया है। मनुष्य को परमात्मा ने क्यों बनाया? इस प्रश्न का उत्तर हमें वेद और ऋषियों द्वारा वेदों के व्याख्यान रूप में लिखे गये शास्त्रों व ग्रन्थों से होता है। मनुष्य जन्म का उद्देश्य मनुष्य की जीवात्मा के पूर्व जन्म के कर्म हैं जिनके फल सुख व दुःख का उपभोग कराने के लिए परमात्मा जीवात्माओं को जन्म देता है। सत्यासत्य का विवेचन करने पर ज्ञात होता है कि परमात्मा मनुष्यों को अच्छे कर्मों का फल सुख व बुरे कर्मों का फल दुःख के रूप में देता है। यदि मनुष्य जन्म में, जो कि उभय योनि है अर्थात् इसमें हम कर्मों को भोगते हैं और नये कर्म करते भी हैं, हम कोई बुरा कर्म न करें और केवल अच्छे कर्म ही करें तो हमें कोई दुःख ईश्वर की व्यवस्था से प्राप्त नहीं होगा। अच्छे कर्मों वा कर्तव्यों का ज्ञान परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य अंगिरा को एक–एक वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान देकर कराया है। इन चार ऋषियों के बाद ब्रह्मा, मनु आदि अनेक ऋषि हुए और यह परम्परा महाभारतकाल तक लगभग 1.96 अरब वर्षों तक चली है। अन्तिम ऋषि जैमिनी जी को बताया जाता है और उसके बाद विछिन्न ऋषि परम्परा ऋषि दयानन्द पर पुनर्जीवित हुई और वहीं समाप्त भी हो गई। ऋषि दयानन्द के अनुयायियों में पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ, डा. रामनाथ वेदालंकार, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती आदि अनेक वैदिक विद्वान हुए हैं जो ऋषितुल्य ही पवित्र हृदय व देश–समाज के हितैषी थे। हमारा समस्त वैदिक साहित्य एवं ऋषि मुनि मदिरापान वा नशे के विरुद्ध थे जिसका प्रमुख कारण नशीले पदार्थ मद्य वा शराब आदि से बुद्धिनाश और चारित्रिक पतन का होना है। देश की आजादी के आन्दोलन में अंग्रेज सरकार का शराब की बिक्री के लिए विरोध किया जाता था। धरने व प्रदर्शन किये जाते थे। गांधी जी ने भी कहा था कि जब देश आजाद हो जायेगा तो कलम की नोक से पहला काम देश में पूर्ण नशा–शराब बन्दी का किया जायेगा। इसके विपरीत आजादी के बाद केन्द्र व राज्यों में जो सरकारें रहीं उन सभी ने शराब व नशे के पदार्थों की बिक्री में उन सिद्धान्तों का पालन नहीं किया जिसकी बात आजादी के आन्दोलन में देश के सभी बड़े बड़े नेता किया करते थे। सरकार को राजस्व से प्रेम है परन्तु ऐसा लगता है कि वह राजस्व का चिन्तन करते हुए नैतिकता व देशवासियों के चरित्र के मापदण्डों को विस्मृत कर शराब की बिक्री में वृद्धि के नाना प्रकार के उपायों को बढ़ावा देती है। यह दुःखद एवं अत्यन्त चिन्ताजनक है। इससे देश का भविष्य व देश के माता–पिता व परिवार रोग, अल्पायु, आर्थिक दिवालियापन आदि अनेक रोगों व

व्याधियों से ग्रस्त रहते हैं और उनमें से अधिकांश का जीवन दुःखमय व नरक के समान बनता है।

मनुष्य जीवन की उन्नति में जो बाधक कार्य हैं उनका त्याग सबको करना चाहिये। ऐसा इसलिये करना चाहिये कि उन कार्यों को करने से मनुष्य की अवनति, पतन व जीवन दुःखमय बनता है। शराब व नशा करने से मनुष्य की शैक्षिक उन्नति तो बाधक होती ही है, उसका स्वास्थ्य भी बिगड़ता है और उसके फेफड़े, लीवर व अन्य अंग–प्रत्यंग कमजोर व रोगी हो जाते हैं। शराब पीने के कुछ समय बाद ही व्यक्ति आलस्य से घिर जाता है और किसी भी अच्छे कार्य में उसकी रूचि नहीं होती। मदिरापान के कुछ बार के अभ्यास से ही वह उसका आदी हो जाता है और उसका ध्यान हर समय मदिरापान व नशा करने में ही रहता है। मदिरा का सेवन करने वाले सभी लोग जानते हैं कि मदिरा का सेवन करना बुरी प्रवृत्ति व आदत है, परन्तु कुछ बार मदिरा पीने से जो आदत पड़ जाती है, उसको छोड़ने की इच्छा करने पर भी वह छोड़ नहीं पाते। समाज में अधिकांश अपराध करने वाले लोग अपराध करने से पूर्व मदिरा का सेवन करते हैं। चोरी, हत्या, बलात्कार भी शराब पीकर ही किये जाते हैं। आजकल मदिरापान करना एक फैशन सा हो गया है। जिन लोगों को मदिरापान की बुरी आदत होती है, उनकी संगति में कोई भला सज्जन मनुष्य आ जाये तो यह लोग उसको भी नाना प्रकार से झूठे व प्रलोभन वाले वचन बोलकर उनको मदिरा पान करने के लिए बाध्य करते हैं। हमारे अनेक साथी शराब का सेवन करते थे। एक सज्जन मित्र का बड़ा अच्छा परिवार था। आज वह इस संसार में नहीं है। लगभग 10–15 वर्ष शराबादि के अत्यधिक सेवन से वह मृत्यु का ग्रास बन गये। ऐसे ही एक मित्र हमारे साथ कार्यरत रहे। वह फुटबाल के बहुत अच्छे खिलाड़ी थे। देहरादून व इससे बाहर भी उनकी बहुत प्रसिद्धि थी। ऑफिस में वह शराब प्रेमियों के साथ उठते बैठते थे। युवावस्था में ही उनको मदिरा की लत लग गई। आज यद्यपि वह जीवित हैं, उनका शरीर कहने मात्र का शरीर है, वह जर्जरित व शक्तिहीन हो चुका है। अब सुना है कि उन्होंने मजबूरी में शराब छोड़ रखी है। शायद रोगी, शक्तिहीन व वृद्ध होने पर सभी को शराब छोड़नी पड़ती है। परिवार उनके खर्चीले उपचार व सेवा करके दुःखी हो जाता है। इसके बाद शराबी व्यक्ति को मृत्यु का ग्रास बनना पड़ता है। मृत्यु से पूर्व का उनका जीवन नारकीय जीवन होता है। कुछ का उससे भी अधिक दुःखमय होता है। हम एक ऐसे आर्यमित्र को भी जानते हैं जिनकी आय अधिक थी। उनके कार्य में सहयोगी मदिरापान करते थे। उन्हें उनकी संगति करनी पड़ती थी अन्यथा उन्हें वह काम छोड़ना पड़ता। उन्होंने काम नहीं छोड़ा। धन तो उन्होंने बहुत कमाया परन्तु उनको भी शराब व मांसाहार का रोग लग गया था। कई वर्ष पहले यात्रा कर रहे थे, वाहन में बैठे बैठे सो गये, निद्रावस्था में ही एक सड़क दुर्घटना में उनका देहावसान हो गया। व्यक्ति अच्छे थे और ऋषि के प्रशंसक थे। आर्ष साहित्य के अध्ययन में भी उनकी रूचि थी परन्तु वह जहां कार्यरत थे वहां अधिक लोग मदिरापान करते थे। वह भी उसमें गिर गये और असमय इस संसार से चल बसे। हमें व दूसरों को उनसे बहुत प्रेरणायें मिलती थी। हम उनसे वंचित हो गये।

हम आजकल अपने एक मित्र से मिलने जाते हैं। वहां एक सेवानिवृत अधिकारी आते थे जो मदिरापान करते थे। एक बार उनसे वार्तालाप चल रहा था। वह अपने युवावस्था काल की बातें सुनाने लगे और शराब और मांस की प्रशंसा करने लगे। हमने उनकी बातों को सुना और कर्मफल सिद्धान्त व शारीरिक रोगों के उदाहरणों के आधार पर उनका निराकरण किया। हमने तब भी उनकी बातों के आधार पर शराब और मांस के सम्बन्ध में एक लेख लिखा। आजकल उनको आंखों से दिखना बहुत कम हो गया है। वह अब पढ़ लिख नहीं सकते। एक सहायक के साथ कहीं आ जा सकते हैं। नेत्र दोष व अन्धता भी अधिक मात्रा में मदिरापान करने का परिणाम होता है। अब डाक्टर उन्हें 35 हजार तक के इंजेक्शन लगाते हैं परन्तु फिर भी वह स्वस्थ नहीं हो पा रहे हैं। बुद्धिमान मनुष्य वह होता है जो कार्य करने से पहले उसके परिणाम का चिन्तन कर उसको जान लेता है। शराब का पीना किसी भी दृष्टि से लाभप्रद नहीं है। इससे हानि ही हानि है। ऐसे लोगों को सबसे पहले अपनी संगति बदलनी चाहिये। मदिरापान करने वालों की संगति यथाशीघ्र छोड़ देनी चाहिये और स्वास्थ्यवर्धक भोजन गोदुग्ध, गोघृत, फल, तरकारियों का सेवन करने के साथ प्रातः भ्रमण, व्यायाम व योग की ध्यान विधि से ईश्वरोपासना व दैनिक यज्ञ आदि का सेवन करना चाहिये। ऐसा करके दानव मनुष्य भी मानव व देवता बन सकते हैं और अपना और अपने शुभचिन्तक परिवारजनों का हित कर सकते हैं।

हमने मदिरापान करने वाले परिवारों की दुर्दशा को भी देखा है। ऐसे लोगों की पत्नियों को अपना व बच्चों का पालन करने के लिए छोटा मोटा कार्य करना पड़ता है। कई तो दूसरों के घरों मे चौका बर्तन आदि कार्य करती हैं। बच्चों व परिवारजनों को अच्छा भोजन नसीब नहीं होता। बच्चे अच्छे स्कूलों में नहीं पढ़ पाते। बीच में ही उनकी पढ़ाई रुक जाती है। मदिरापान करने वाले परिवार के मुख्य व्यक्ति बच्चों के पिता प्रायः अस्वस्थ रहते व अक्सर हो जाया करते हैं। धन कमा नहीं पाते और यदि कुछ कहीं से मिलता है तो उससे मदिरापान करते हैं। ऐसे परिवार कर्जदार हो जाते हैं और समाज में उनकी प्रतिष्ठा भी नहीं होती। सभी लोग ऐसे परिवारों से दूरी बनाकर रखते हैं। सहायता के लिए न कोई पड़ोसी आता है और न रिश्तेदार। ऐसे बच्चों की मनोदशा का हमने अनुभव किया है। वह अपनी पीड़ा किसी से कह नहीं सकते। प्रतिभावान व पुरुषार्थी होने पर भी समाज की दौड़ में वह पिछड़ जाते हैं और साधारण कार्य करने को विवश होते हैं। कालान्तर में वह स्वयं संगति दोष और विचारों की दृढ़ता न होने से स्वयं भी शराब का शिकार हो जाते हैं और उनके भी परिवार का पतन होता है। इससे यही सिद्ध होता है कि मनुष्य शराब का सेवन किंचित भी न करे और न ही मदिरापान करने वाले लोगों की संगति करे।

यह बहुत ही दुःखद है कि हमारी प्रतिनिधि सरकारें अपने भारी भरकम खर्चों को पूरा करने के लिए राजस्व की प्राप्ति के लिए शराब जैसी हानिकारक व देश के पतन में सहकारी मदिरापान की बिक्री बढ़ाने में लगी रहती हैं। सरकार को तो राजस्व कम ही मिलता है। सरकार से अधिक तो शराब व्यापारियों व माफियाओं के पास धन जाता है जिससे अच्छे काम ही होते होंगे, यह अनुमान

नहीं लगता। यदि शराब की कुल खपत पर विचार करें तो स्थिति चौंकाने वाली होगी। शराब पीने वाले अधिकांश लोग मांस भी खाते हैं। इससे पशु हिंसा को बढ़ावा मिलता है जिसकी हमारे वेद आदि सभी धर्म ग्रन्थों व धार्मिक महापुरुषों ने निन्दा की है। राम, कृष्ण व दयानन्द के देश में उनके अनुयायी लोग यदि मदिरा पान करते हैं तो यह देशवासियों द्वारा अपने महापुरुषों का अपमान है। आश्चर्य तो इस बात का है कि हमारे धार्मिक पुजारी व मठ मन्दिरों के संचालक स्वामी भी इन बुरे पदार्थों के सेवन का विरोध नहीं करते। हमने मन्दिरों आदि में कहीं ऐसा कोई संकेत नहीं देखा कि जहां लिखा हो कि मदिरा और मांस का सेवन करने वाला मनुष्य धार्मिक नहीं होता। वह पशुओं को कश्ट देने के कारण अपराधी होता है जिसका दण्ड ईश्वर के विधान से उन्हें मिलता है। पशुओं का मांस खाने से रोगों से संबंधित जानकारियां भी हमारे पौराणिक सनातनी धार्मिक विद्वान व धर्मप्रचारक अपने अनुयायियों को नहीं देते। यह कैसे नेता व विद्वान हैं जो अपने ही अनुयायियों को पथ भ्रष्ट व पापों में लिप्त रहने देते हैं। यह स्थिति दुःखद है।

यदि हम अपने समाज व देश को उत्तम व उत्कर्ष की ओर ले जाना चाहते हैं तो हमें युवापीढ़ी सहित सभी लोगों को जो मदिरा व नशे का सेवन करते हैं, इससे होने वाली हानियों का प्रचार करके उन्हें बचाना होगा। स्वामी रामदेव जी धर्मप्रचारकों में अपवाद हैं। वह अपने उपदेशों व व्याख्यानों में मदिरा, मांस, अण्डे व धूम्रपान आदि की आलोचना करते रहते हैं। सभी धार्मिक नेताओं व विद्वानों का यह कर्तव्य हैं कि वह लोगों को सत्यासत्य से परिचित करायें और उन्हें बुराईयों को छोड़ने की प्रेरणा करें। **प्राचीन काल में हमारे देश में महाराज अश्वपति हुए हैं जिन्होंने कुछ महर्षि याज्ञवल्क्य को उनका आतिथ्य ग्रहण न करने पर कहा था कि मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है, कोई कंजूस नहीं है, कोई मदिरा व मांस आदि का सेवन करने वाला नहीं है, कोई ऐसा नहीं जो प्रतिदिन अग्निहोत्र न करता हो, कोई व्यभिचारिणी स्त्री नहीं है तो व्यभिचारी पुरुष के होने का तो प्रश्न ही नहीं है।** आज विश्व में एक भी ऐसा देश नहीं है जहां के लोग मदिरा व तामसिक पदार्थों का सेवन न करते हों। यह सत्य है कि विज्ञान ने असीम उन्नति की है परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि वह नैतिकता व चारित्रिक व्यवहार की उपेक्षा की जाये। मदिरापान व मांसाहारियों को ऐसा करना इस जन्म व परजन्म में बहुत महंगा पड़ेगा। ईश्वर सबको प्रेरणा करें कि वह असत्य व दुगुर्णों का त्याग कर सत्य व सद्गुणों को धारण कर समाज व देश को विश्व का आदर्श लोक बनायें। ईश्वर हमें असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर चलने की प्रेरणा करें और हम उसका पालन कर अपने जीवन को आदर्श जीवन बनायें। मदिरापान, मांसाहार, अण्डों का सेवन और धूम्रपान जैसे व्यसनों का सर्वथा त्याग कर दें। इसी में हमारी, हमारे परिवार, समाज व देश की भलाई है। सभी सरकारों को भी समाज, राज्य व देश को बुराईयों से मुक्त करने में अपनी प्रमुख भूमिका को तत्परता व प्रभावपूर्ण तरीके से निभाना चाहिये। ओ३म् शम्।

ओ३म्

28 मई सावरकर जयन्ती पर

वीर सावरकर की अण्डमान की कालापानी जेल से मुक्ति की यथार्थ कथा

—डा० नवदीप कुमार एवं श्री मनमोहन कुमार आर्य

सन् 1918 में प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद क्रमबद्ध और निरन्तर समग्र देश में राजनैतिक बंदियों को मुक्त कराने के लिए जो मांग रखी गयी, वह बहुत प्रभावशाली तरीके से प्रचारित की गई। जनता व उसके लोकप्रिय नेताओं तथा प्रैस ने आवेदन–पत्रों, सभाओं सम्मेलनों, कांग्रेस पार्टी ने अपने अधिवेशनों तथा काउन्सिल तक के माध्यम से अपनी मांग प्रचारित की व ब्रिटिश अधिकारियों को पहुंचाईं। नेशनल यूनियन ऑफ बॉम्बे, श्री अनन्त राव गाडरे, सेनापति बापट, शिवराम पन्त परज्जपे आदि ने तन मन से हस्ताक्षर अभियान चलाया और भारत–सचिव मान्टेग्यू तक उस याचिका को पहुंचाया। भारत–सचिव ने याचिका अस्वीकार कर दी। सन् 1919 के अमृतसर के कांग्रेस अधिवेशन में पुरजोर तरीके से राजनैतिक बंदियों की मुक्ति की मांग का विशेष प्रस्ताव पारित किया गया। महराष्ट्र की जिला होम रूल लीग ने सावरकर बन्धुओं की मुक्ति के लिए वायसराय के पास तार भेजा। 24 दिसम्बर सन् 1919 को शाही दयालुता का फरमान जारी हुआ। परिणामस्वरूप सभी प्रान्तीय सरकारों ने राजनैतिक बंदियों की मुक्ति के लिए जेलों के दरवाजे खोल दिए। अण्डमान की पोर्ट ब्लेयर स्थिति सेल्युलर जेल जो कालापानी के नाम से विख्यात रही है, उस जेल से भी अनेकानेक राजनैतिक कैदी मुक्त कर दिए गए। वीर दामोदर सावरकर और उनके भाई को दस वर्ष की कैद पूरी कर लेने पर भी मुक्त नहीं किया गया जबकि पांच वर्ष की कैद बिता चुके कई राजनैतिक कैदी मुक्त कर दिए गए थे। वीर सावरकर की रूग्ण अवस्था अपने चरम पर थी। वह लगभग मृत्यु शय्या पर ही थे। सेल्युलर जेल के चिकित्सालय में फेफड़ों के क्षय रोग टी.बी. का उनका इलाज किया गया। दिन भर में दूध का एक घूंट ही उनकी खुराक रह गई थी।

सन् 1920 व 1921 में भी भारत के नेताओं और भारतीय प्रैस ने उनकी मुक्ति के लिए प्रभावशाली ढंग से मांग रखी। **केन्द्रीय लेजिस्लेटिव असेम्बली में श्री सरदार विट्ठल भाई पटेल ने 24 फरवरी, 1920 को सावरकर बन्धुओं का सन्दर्भ लेते हुए राजनैतिक अवज्ञाकारी बन्दियों की मुक्ति के लिए प्रस्ताव रखा।** श्री जी.एस. खापर्डे ने सावरकर बन्धुओं का ही मामला उठाया। **बाल गंगाधर तिलक ने मि. मान्टेग्यू को सावरकर की मुक्ति हेतु जोरदार पत्र लिखा।**

मई, 1920 में गांधी जी ने भी **'यंग इण्डिया'** में लिखा कि सावरकर बन्धुओं के विरुद्ध कभी भी यह प्रमाणित नहीं हो पाया कि वे किसी हिंसात्मक कार्रवाई में शामिल थे। जब तक यह सिद्ध नहीं हो जाता कि सावरकर बन्धु मुक्ति के बाद किसी प्रकार से राज्य के लिए

खतरा हैं, वायसराय दोनों बन्धुओं को मुक्त करने के लिए बाध्य हैं। भाई परमानन्द ने भी अपनी मुक्ति के बाद कर्नल वैगवुड (Colonel Wedgewood), जो कि उन दिनों ब्रिटेन की संसद में मजदूर दल के प्रसिद्ध नेता थे तथा भारत की यात्रा पर आये हुए थे, उनसे सम्पर्क किया। उन्होंने उनकी इंग्लैण्ड वापसी पर जनवरी–फरवरी, 1921 में ब्रिटिश प्रैस के माध्यम से सावरकर की अंडमान में हो रही दुर्दशा के विरुद्ध प्रचार–संघर्ष को चरम पर पहुंचा दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के मित्र व प्रशंसक पादरी सी.एफ. एन्ड्रूज ने भी अनेक लेख अण्डमान की सेलुलर जेल में राजनैतिक बन्दियों की अमानवीय यातनाओं व जेल से मुक्ति के लिए लिखें। सावरकर के अण्डमान से लिखे गए पत्रों को देश की प्रैस व समाचार पत्रों ने भी प्रकाशित किया। जनता और नेताओं ने उन समाचारों को पढ़ा जिससे देशवासियों की भावनायें अपने इन बन्धक नेताओं की जेल से मुक्ति के लिए आन्दोलन के चरम बिन्दु तक पहुंच गयीं। **अगस्त, 1920 में बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु ने देश को हिला कर रख दिया।** अण्डमान की सेलुलर जेल के कैदियों ने भी अपने इस लोकप्रिय नेता के सम्मान व वियोग के दुःख में एक दिन का उपवास वा अनशन रखा। गांधी जी ने खिलाफल आन्दोलन के पक्ष में अपना अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन आरम्भ कर दिया और एक वर्ष में **'स्वराज्य'** प्राप्त करने का निश्चय किया। **सावरकर ने घोषणा की थी कि गांधी जी का यह खिलाफत आन्दोलन भविष्य में देश के लिए आफत सिद्ध होगा।**

केन्द्रीय असेम्बली के शीर्ष नेताओं ने सावरकर के मामले में प्रभावशाली तरीके से रुचि लेना आरम्भ किया। **मार्च, 1921 में श्री के.वी. रंगास्वामी अय्यंगर जो कि असेम्बली के सदस्य थे, गवर्नर–जनरल को सावरकर को मुक्त करने के लिए दमदार पत्र लिखा। इन सबके परिणामस्वरूप सावरकर बन्धुओं के सेल्युलर जेल से स्थानान्तरण के आदेश जारी किए गए।** नवाब सर बहराम खां और मि. हयात खां ने सावरकर जी की रिहाई का पुरजोर विरोध किया। अय्यंगर ने कहा कि सावरकर की ओर से वह स्वयं शासन को विश्वास दिलाते हैं कि सावरकर की भारत में उपस्थिति से किसी भी प्रकार का कोई खतरा नहीं होगा। सन् 1921 के प्रारम्भिक महीनों में ही सावरकर जी के गले में डला हुआ 'D' (Dangerous) श्रेणी का बिल्ला उतार दिया गया था। अन्ततः 2 मई, 1921 को सावरकर बन्धुओं को अण्डमान की सेल्युलर जेल जिसे कालापानी कहा जाता था और जो एक प्रकार से राजनीतिक कैदियों के लिए मृत्युलोक था, उससे सावरकर जी को विदाई मिली।

सावरकर जी की रिहाई का यह प्रामाणिक विवरण है। कुछ लोग द्वेष भाव से सावरकर जी पर यह मिथ्या आरोप लगाते हैं कि सावरकर जी ब्रिटिश सरकार से माफी मांगकर जेल से मुक्त हुए थे। यह विचार व आरोप असत्य, मिथ्या व अप्रमाणिक है। कुछ राजनीतिक दलों की सावरकर जी के यश को नष्ट करने का यह कुत्सित प्रयास है। यह भी बता दें कि यह विवरण श्री धनंजय कीर के अंग्रेजी भाषा के 570 पृष्ठीय प्रामाणिक ग्रन्थ **'वीर सावरकर'** के आधार पर दिया गया है। यह ग्रन्थ सन् 1950, 1966 और 1988 में प्रकाशित हुआ है। यह भी बता दें की इस तथ्यात्मक पुस्तक की देश के अनेक प्रमुख समाचार पत्रों सहित एक जिला जज महोदय ने भी भूरि भूरि प्रशंसा की थी। इन प्रमाणों व लेख से सावरकर जी विषयक विरोधियों द्वारा फैलाई भ्रान्तियों का निराकरण हो जाता है। ओ३म् शम्।

ओ३म्

हमारा यह जन्म हमारे पूर्वजन्म का पुनर्जन्म है और मृत्यु के बाद हमारा पुनर्जन्म अवश्य होगा

–मनमोहन कुमार आर्य

हम मनुष्य हैं और लगभग 7 दशक पूर्व हमारा जन्म हुआ था। प्रश्न है कि जन्म से पूर्व हमारा अस्तित्व था या नहीं? यदि नहीं था तो फिर यह अभाव से भाव अर्थात् अस्तित्व न होने से हुआ कैसे? विज्ञान का सिद्धान्त है कि किसी भी पदार्थ का रूपान्तर तो किया जा सकता है परन्तु उसे पूर्ण नष्ट अर्थात् उसका अभाव नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार जिस चीज का अभाव है अर्थात् जिसका अस्तित्व ही नहीं है, उस अभाव से भी कोई चेतन व जड़ पदार्थ बन नहीं सकता। भाव से भाव होता है और अभाव का अभाव रहता है। इस सिद्धान्त के आधार पर हमारा इस जन्म से पूर्व अस्तित्व व पुर्नजन्म सिद्ध होता है। हम यदि आज विद्यमान हैं, जन्म के समय व उसके बाद अब तक विद्यमान रहे हैं तो यह निश्चित होता है कि हमारा अस्तित्व हमारे जन्म से पूर्व भी था। यदि न होता तो फिर इस जन्म में वह माता के शरीर में कहां से व कैसे आता? आज विज्ञान ने बहुत प्रगति कर ली है। उसने भौतिक पदार्थ को रूपान्तरित करके अनेकानेक नये व भिन्न भिन्न भौतिक पदार्थ बनायें हैं। एक पदार्थ में जो एक से अधिक तत्व जैसे पानी में हाइड्रोजन और आक्सीजन होती है, उन्हें पृथक करने में भी सफलता प्राप्त की है, परन्तु आज का आधुनिक विज्ञान भी किसी एक व एक से अधिक भौतिक पदार्थों से एक व अधिक आत्माओं को नहीं बना सका है। इससे आत्मा का स्वतन्त्र व अन्य पदार्थों से पृथक अस्तित्व सिद्ध होता है। यदि जड़ पदार्थों से सर्वथा भिन्न चेतन आत्मा का पृथक व स्वतन्त्र अस्तित्व न होता तो हम अनुमान कर सकते हैं कि वैज्ञानिकों ने भौतिक पदार्थों से आत्मा को बना लिया होता और आत्मा के बनने के बाद उन्होंने मनुष्य आदि अनेक प्राणियों के शरीर भी प्रयोगशाला में, माता के गर्भ में नहीं, बना लिये होते। ऐसा नहीं हो सका अतः जीवात्मा एक अभौतिक व चेतन पदार्थ है जिसका पृथक व स्वतन्त्र अस्तित्व है। जीवात्मा मनुष्य का हो या किसी भी प्राणी का, यह एक अविनाशी, अनादि, भाव अर्थात् सत्तावान, चेतन व एकदेशी पदार्थ सिद्ध होता है। इसी चेतन आत्मा का मनुष्य व अन्य प्राणियों के शरीरों में जन्म–मरण होता रहता है जिसके कुछ नियम व सिद्धान्त हैं, जिनकी चर्चा हम आगे करेंगे।

मनुष्य शरीर चेतन जीवात्मा एवं जड़ पदार्थों से निर्मित युग्म को कह सकते हैं। जीवात्मा जन्म से पूर्व माता के गर्भ में आता है। मृत्यु पर्यन्त यह मनुष्य के शरीर में रहता है और मृत्यु के समय शरीर से निकल जाता है। शरीर से निकलने की प्रक्रिया ईश्वर से प्रेरित होती है। कोई भी जीवात्मा मरना अर्थात् अपने इस जीवन के शरीर को छोड़ना नहीं चाहता। एक अदृश्य सत्ता उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध शरीर से निकालती है और जीवात्मा सूक्ष्म शरीर सहित विवश होकर दृश्यमान भौतिक जड़ शरीर का त्याग कर चली जाती है और कुछ काल के बाद ईश्वरीय नियमों व व्यवस्था से पुनर्जन्म ग्रहण करती है। जीवात्मा का शरीर से निकलना ही

मनुष्य व अन्य प्राणियों की मृत्यु कहलाती है। डाक्टर भी परीक्षा करने के बाद कहते हैं कि **'ही इज नो मोर'** अर्थात् वह मनुष्य वा उसका आत्मा शरीर में नहीं रहा वा शरीर छोड़ कर चला गया है। **'मर गया'** शब्द पर भी विचार करें तो इससे भी यह आभास होता है कि कोई शरीर छोड़ कर चला गया है। किसी के मरने पर **'चल बसा'** भी कहा जाता है जिसका अर्थ यह होता है कि मृतक शरीर का आत्मा कहीं चला गया है और शरीर यहीं पर बसा व पड़ा है।

मनुष्य का जन्म माता के गर्भ से होता है जहां हिन्दी के 10 महीनों में उसका निर्माण होता है। माता के गर्भ को क्षेत्र या खेत की उपमा दी जाती है और पिता के शुक्राणुओं को बीज की संज्ञा दी जाती है। जिस प्रकार से किसान अपने खेत में बीज बोता है, उससे पौधे निकलते हैं, किसान खेत की निराई व गुड़ाई करता है जिसके परिणाम स्वरूप अथवा प्राकृतिक वा ईश्वरीय नियमों के अनुसार समय पर फसल पक कर तैयार हो जाती है। एक बीज से वटवृक्ष बन जाता है। बीज से पौधे, अन्न, ओषधि, वनस्पतियां तथा फल आदि उत्पन्न होते हैं। वृक्ष व वनस्पतियां केवल जड़ वा भौतिक पदार्थ नहीं होते अपितु इनमें एक बीज से लेकर पौधे के रूप में व उसके बाद भी वृद्धि देखी जाती है। इसके विपरीत जड़ पदार्थ जल, वायु, मिट्टी व पत्थर जैसे होते हैं उनमें किसी प्रकार की वृद्धि नहीं देखी जाती है। अतः वृक्ष व वनस्पतियों में भी मनुष्य शरीर की भांति सुशुप्त अवस्था में चेतन जीवात्मा होना प्रतीत होता है। यदि बीज में जीवात्मा न होती तो फिर पौधों व वृक्षों में वृद्धि का सिद्धान्त काम न करता जैसा कि मनुष्य शरीर में जन्म से लेकर युवा व प्रौढ़ावस्था तक होता है। यह वृक्ष व पौधे वायु, जल, सूर्य की ऊर्जा व प्रकाश सहित भूमि से भोजन ग्रहण करते हैं। मनुष्य भी अन्न, वनस्पतियों, फल व गोदुग्ध आदि से अपना भोजन ग्रहण करता है जो उसके शरीर की वृद्धि व स्थायित्व का कारण होता है। इससे मनुष्य आदि प्राणियों सहित वृक्षों व वनस्पतियों में भी मनुष्य के समान चेतन जीवात्मा के होने का अनुमान व आभास होता है परन्तु वनस्पतियों आदि में जीवात्मा जाग्रत अवस्था में न होकर सुशुप्त अवस्था में होता है, यह प्रत्यक्ष दिखता है। वनस्पतियों के पास मनुष्यों के समान ज्ञानेन्द्रियां व कर्मेन्द्रियां भी नहीं है।

प्रायः यह प्रश्न किया जाता है कि यदि जीवात्मा शरीर से पृथक एक चेतन पदार्थ है और इसका पुनर्जन्म हुआ व होता है तो फिर इसे अपने पूर्वजन्म की बातें स्मरण क्यों नहीं रहती? इसका उत्तर यह है कि मनुष्य के पूर्व जन्म के शरीर का मृत्यु को प्राप्त होने पर उसकी अन्त्येष्टि व दाह संस्कार आदि कर दिया जाता है। वह शरीर नये जन्म में साथ नहीं जाता। उसके पूर्वजन्म के मन, मस्तिष्क, बुद्धि व अन्तःकरण आदि शरीर के अवयव सभी यहीं छूट जाते हैं। दूसरी बात यह भी है कि हम इसी मनुष्य जन्म में प्रतिदिन पूर्व की बातों को भूलते रहते हैं। हमने प्रातः कब किससे क्या–क्या बातें की, क्या–क्या पदार्थ कब खाये, आज, कल व परसों कौन–कौन से वस्त्र पहने थे, उनका रंग कैसा था, हम विगत दो चार दिन में किन–किन से मिले और क्या–क्या बातें की आदि का हमें नाम मात्र का ज्ञान रहता है। अधिकांश बातें हम भूल चुके होते हैं। हम किसी से बात कर रहं हों और वह व्यक्ति यदि दस मिनट बाद कहे कि आप अभी जो बोले हैं, उसे उसी रूप में शब्दों व वाक्यों को आगे पीछे किये व छोड़े बिना उसी भाव–भंगिमा में दोहरा दें, तो हम सभी शब्दों व वाक्यों को ज्यों का त्यों नहीं दोहरा सकते। इससे हमारे भूलने की प्रवृत्ति का ज्ञान होता है। जब हमें इस जन्म की दो चार दिन की बहुत सी बातों का ज्ञान नहीं रहता तो फिर यह कहना कि पिछले जन्म की बातें याद क्यों नहीं रहती, उचित प्रश्न नहीं है। यह भी सम्भव है कि हम पिछले जन्म में मनुष्य ही न रहे हों, पशु, पक्षी आदि किसी अन्य योनि में रहे हों, तो फिर कोई

कैसे पिछले जन्म की बातों का किंचित भी ज्ञान रख सकता है। इसके विपरीत हमारे भीतर जन्म जन्मान्तरों के संस्कार रहते हैं। बच्चा रोना जानता है, मां का दूध पीना भी उसको आता है। वह सोते हुए हंसता है और कभी गम्भीर व उदास भी हो जाता है। यह सब पूर्व जन्मों के संस्कारों के कारण ही होता है। मां बच्चे को दूध पिलाते समय उसे दूघ खींचना नहीं सिखाती परन्तु बच्चा पहले से दूघ खींचना व पीना जानता है, इससे उसका पूर्वजन्म सिद्ध होता है। अब एक परिवार की चर्चा करते हैं। एक परिवार में जुड़वा बच्चे पैदा होते हैं। दोनों का लालन पालन समान रूप से किया जाता है परन्तु दोनों की ज्ञान प्राप्ति व विषयों को ग्रहण करने की शक्ति में अन्तर देखा जाता है। एक ही परिवार में एक बच्चा गणित में तेज होता है दूसरा कमजोर, एक को दाल पसन्द है और दूसरे को सब्जी, एक हंसमुख है और दूसरा उदास स्वभाव वाला, एक माता पिता का अज्ञाकारी होता है तो दूसरा अवज्ञा करता है, यह सब भी पूर्वजन्म को सिद्ध करते हैं।

महाभारत के अंग प्रसिद्ध ग्रन्थ गीता में कहा गया है '**जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ध्रुवं जन्म मृतस्य च'** अर्थात जन्म लेने वाले मनुष्य व प्राणी की मृत्यु होना निश्चित है और इसी प्रकार मरे हुए प्राणी का पुनर्जन्म होना भी निश्चित अर्थात् घ्रुव सत्य है। हम लोग देखते हैं कि संसार में अनेक प्रकार के प्राणियों की योनियां हैं। इसका कारण क्या है? इसका कारण जीवात्मा के पूर्व जन्म के कर्म हुआ करते हैं। योगदर्शन में महर्षि पतंजलि ने कहा है कि हमारे प्रारब्ध से हमारा नया जन्म, जाति, आयु और भोग अर्थात् सुख व दुःख निश्चित होते हैं। विवेचन व विश्लेषण करने पर यह बात सत्य सिद्ध होती है। प्रारब्ध पूर्व जन्म में किये गये कर्मों के खाते को कहते हैं जिनका मृत्यु से पूर्व भोग नहीं किया जा सका। जाति का अर्थ यहां मनुष्य जाति, पशु जाति, पक्षी जाति व इतर योनियां हैं। यही कारण है कि वेदों में ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति का सत्य स्वरूप वर्णित व व्याख्यात है। इसके साथ मनुष्यों के कर्तव्य कर्मों का विधान भी वेदों में दिया गया है। इन कर्मों में ईश्वरोपासना के प्रयोजन व विधि पर भी प्रकाश पड़ता है। मनुष्यों को वायु, जल और पर्यावरण की शुद्धि, रोगों से बचाव व निवारण, सुख–शान्ति व परोपकार आदि के लिए अग्निहोत्र करना चाहिये। माता–पिता–आचार्य सहित वृद्ध जनों की सेवा सुश्रुशा करनी चाहिये, पशु–पक्षियों के प्रति दया व प्रेम का भाव रखने के साथ उनके भोजन आदि में भी सहयोग करना चाहिये और विद्वान अतिथियों की सेवा सत्कार का भी विधान वेदों में मिलता है। जीवन को ज्ञान व संस्कार सम्पन्न करने के लिए विद्याध्ययन सहित गृहस्थाश्रम वा विवाह आदि का विधान भी वेदों में प्राप्त होता है। परोपकार व दान की महिमा भी वेदों में गाई गई है। ऐसा करने पर हमारा यह जन्म व भावी पुनर्जन्म उन्नत होता है। हमारे प्राचीन ऋषि मुनि व वेदों के विद्वान सभी ज्ञानी व मनीषी थे। उन्होंने विश्लेषण, चिन्तन–मनन व वेद प्रमाणों की समीक्षा करने के बाद ही कर्मकाण्ड करने का विधान किया था। ऐसा करके ही हम उन्नति व धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त होकर अपने जीवन को सफल कर सकते हैं। यह भी बता दें कि आत्मा सत्य, चेतन, निराकार, अल्पज्ञ, ज्ञान व कर्म के स्वभाव से युक्त, एकदेशी, अल्प शक्तियों से युक्त, ससीम, अनादि, अमर, अविनाशी, जन्म–मरण धर्मा, ज्ञान व श्रेष्ठ कर्मों को करने पर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करती है। जीवात्मा के स्वरूप पर वैदिक साहित्य में अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं। उनका अध्ययन करना चाहिये जिससे आत्मा का ज्ञान व विज्ञान हमें सुस्पष्ट रूप से विदित हो सके और हम अपने जीवन को सत्य मार्ग में चला कर जीवन के उद्देश्य को सिद्ध व सफल कर सकें। ओ३म् शम्।

ओ३म्

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन-देहरादून में चिकित्सालय का शुभारम्भ

—मनमोहन कुमार आर्य

24 मार्च, 2018 को हम वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून गये और वहां आश्रम के यशस्वी मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा एवं आश्रम को अपनी सेवायें देने वाले प्रमुख व्यक्तियों न्यासी श्री महेन्द्र सिंह चौहान, प्रबन्धक श्री वी०के० गर्ग, श्री एस०के० छिब्बर एवं श्री राममूर्ति जी से मिले। विगत अनेक वर्षों से वैदिक साधन आश्रम में सत्संग भवन, आरोग्यधाम तथा भव्य एवं विशाल यज्ञशाला आदि के अनेक निर्माण कार्य सम्पन्न किये गये हैं। कुछ अपूर्ण कार्य अब भी चल रहे हैं। लगभग दो वर्ष पूर्व ही आश्रम में एक भव्य सत्संग भवन बन कर तैयार हुआ था। इस भवन के प्रवेश द्वार के साथ ही आश्रम के मैनेजर व उनके स्टाफ का कार्यालय है। इसके बाद सभा मंत्री जी का कक्ष है। सत्संग भवन के ऊपर भी कुछ कक्ष बनाये गये हैं। यह पूरा भवन भव्यता लिये हुए होने के साथ आधुनिक सुविधाओं से पूर्ण है। इस सत्संग भवन के बाद **''आरोग्यधाम''** नाम से एक चिकित्सालय बनाया गया है। इस चिकित्सालय का मुख्य उद्देश्य तो वेद प्रचार द्वारा आर्यसमाज की सेवा करने वाले सन्यासियों, वानप्रस्थियों एवं उपदेशकों को अस्वस्थ होने पर निःशुल्क चिकित्सा व उपचार प्रदान करना है। इसके साथ पास के

डॉ० रेखा बहुगुणा
डेन्टिस्ट

डॉ० आंचल चावला
होम्योपैथ

श्रीमती मीना राणा
फिजियोथेरेपिस्ट

डॉ० विनोद प्रकाश भट्ट
आयुर्वेदाचार्य

गांवों के लोगों को भी अति कम मूल्य पर चिकित्सा सुविधा प्रदान करना इस चिकित्सालय आरोग्यधाम का उद्देश्य है। आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा और न्यासी श्री महेन्द्र सिंह चौहान ने हमें आरोग्यधाम का भ्रमण कराया और वहां उपलब्ध चिकित्सकों से भी मिलाया। **पहले हम होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से उपचार करने वाली डा. आंचल चावला से मिले।** हमारी यह चिकित्सक मानसिक रोग, सांस की परेशानियां, पथरी, बदहजमी/गैस, जोड़ो का दर्द, थायराइड, चर्म रोग, बालों का झड़ना, माइग्रेन, स्त्रियों का अनियमित मासिक धर्म, अनिद्रा, एलर्जी, मधुमेह, मोटापा, लीवर के विकार, बवासीर, स्त्री रोग, बाल/शिशु रोग, रक्त चाप आदि रोगों की चिकित्सा करती हैं।

इसके बाद हम दन्त चिकित्सक के कक्ष में गये। दंत चिकित्सक का नाम डा. रेखा बहुगुणा है। उनका व उनकी सहायिका और आश्रम के मंत्री जी के साथ हमने एक चित्र लिया। यह चिकित्सक आश्रम–वासियों सहित निकटवर्ती ग्राम नालापानी के लोगों को भी दंत रोगों की चिकित्सा उपलब्ध कराती हैं। इनसे मिलकर हम आयुर्वेदिक युवा चिकित्सक डा. विनोद प्रकाश भट्ट जी से मिले। हमने व श्री महेन्द्र सिंह चौहान जी ने उनसे अपना रक्तचाप चैक कराया। दोनों का ही रक्तचाप ठीक था। यह डाक्टर 36 वर्ष के युवा हैं और आश्रम से 12 किमी. की दूरी पर रतनपुर, शिमला रोड, देहरादून में स्थित अपने निवास से प्रतिदिन आश्रम आते हैं। आश्रम में डाक्टर साहब का रोगियों से मिलने का समय दिन के 10 बजे से 2 बजे तक और अपरान्ह 4 से 6 बजे तक होता है।

डा. भट्ट जी के बाद हम फिजियोथिरैपी की डा. श्रीमती मीना राणा जी से मिले।यह चिकित्सक महोदया जी भी समर्पित भाव से आश्रम व निकटवर्ती रोगियों को अपनी सेवायें दे रहीं हैं।

आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी ने बताया कि शीघ्र ही आश्रम की ओर से एक भारतीय जन औषधि विक्रय केन्द्र का संचालन करने की योजना है। इसके लिए सभी प्रयास किये जा रहे हैं और बहुत शीघ्र इस केन्द्र के संचालित हो जाने की आशा की जा रही है। इससे निकटवर्ती लोगों को कम मूल्य पर एलोपैथी चिकित्सा पद्धति की औषधियां सुलभ हो सकेंगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का इस विषय में कथन है कि गरीबों को सस्ती दवा मिले। गरीबों को बिना दवा के मरने की नौबत न आये। इसलिए देश भर में जन औषधि केन्द्रों का अभियान चलाया जा रहा है। जन औषधि का मोटो है "Quality Medicines at Affordable Prices for All".

आरोग्यधाम में स्वागत कक्ष सहित रोगियों के लिए प्रतीक्षा काल में बैठने के लिए भव्य एवं सुन्दर कक्ष उपलब्ध हैं जहां आधुनिक व सुविधाजनक फर्नीचर भी उपलब्ध है। अभी आरोग्य धाम का कार्य पूरा नहीं हुआ है। धनाभाव ही इसका मुख्य कारण है। आश्रम के मंत्री श्री शर्मा जी ने बताया कि आश्रम के मई, 2018 में होने वाले ग्रीष्मोत्सव से पूर्व आरोग्यधाम के सभी कार्य पूर्ण कर लिये जायेंगे। आरोग्यधाम और सत्संग भवन के सामने विस्तृत व चौड़ी सड़क का निर्माण भी पूरा कर लिया गया है। पार्किंग के लिये भी यहां पर्याप्त सुविधा है।

आश्रम में 17 मार्च से एक वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर प्रथम स्तर संचालित हुआ

जिसका समापन आज 24 मार्च, 2018 को हुआ। यह शिविर आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी के प्रशिक्षण में चला। शिविर में लगभग 84 लोगों ने भाग लिया जो सुदूर नागपुर आदि अनेक स्थानों से पधारे थे। नागपुर से आये व्यक्ति से हमारी भेंट हुई जिन्होंने इस शिविर की प्रशंसा की। आचार्य आशीष जी के निर्देशन में समय समय पर आश्रम में योग व अनेक प्रकार के प्रशिक्षण शिविर लगते रहते हैं जिनमें बड़ी संख्या में विद्यार्थी, युवा वर्ग व प्रौढ़ आयु के आर्यजन आदि भाग लेकर लाभान्वित होते हैं। आश्रम का यह भी सौभाग्य है कि यहां प्रातः व सायं यज्ञ एवं सत्संग होता है जिसमें आचार्य आशीष जी भी उपस्थित होते हैं और याज्ञिकों और आश्रम के साधकों को उपदेश आदि से कृतार्थ करते हैं। आश्रम के पास अपनी एक वृहद गोशाला भी है जहां अनेक दुधारू गौवें हैं। आश्रम का एक परिसर आश्रम से 3 किमी. दूरी पर ऊंची पहाड़ियों पर स्थित है। जहां समय समय पर स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी द्वारा चतुर्वेद पारायण यज्ञ सहित योग, ध्यान, स्वाध्याय, चिन्तन व विचार साधना शिविर आयोजित किये जाते हैं। आश्रम के उत्सवों के अवसर पर शनिवार का प्रातःकालीन सत्र आश्रम के ऊपरी भाग में सम्पन्न होता है। यह स्थान पूर्ण रूप से शान्त स्थान है। यहां महात्मा आनन्द स्वामी जी और प्रभु आश्रित जी तथा स्वामी योगेश्वरानन्द जी ने लम्बे समय तक लम्बी योग साधनायें की हैं। आश्रम का यह परिसर निर्जन स्थान पर है जो चारों ओर दूर दूर तक वनों से आच्छादित है। यहां विद्युत व जल आदि सहित बीएसएनएल मोबाइल नैटवर्क की सेवायें भी सुलभ हैं। पहले यह सेवायें नहीं थी और आश्रम से यहां तक पैदल ही आना होता था परन्तु अब सरकार की ओर से सड़क का निर्माण करा दिया है। मार्ग में कुछ भवन व आवासीय परिसर भी बन गये हैं। यह मार्ग आगे खलंगा तक जाता है जहां अंग्रेजों का नेपालियों से युद्ध हुआ था जिसमें नेपाल के लोग वीरता पूर्वक लड़े थे। यह एक ऐतिहासिक स्थान है जहां पर्यटक भी आते हैं।

इस लेख को विराम देने से पूर्व यह भी बता दें कि आश्रम का आगामी ग्रीष्मोत्सव बुधवार 9 मई, 2018 से रविवार 13 मई, 2018 तक आयोजित किया जा रहा है। उत्सव में प्रातः काल की योग साधना का प्रशिक्षण व निर्देशन स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी द्वारा किया जायेगा। यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या डॉ. नन्दिता शास्त्री जी, वाराणसी होंगी। प्रवचनकर्ता होंगे आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ, आगरा एवं आचार्य आशीष दर्शनाचार्य आदि कुछ प्रमुख विद्वान। इस अवसर पर युवा सम्मेलन और महिला सम्मेलन भी आयोजित होंगे। भजन संन्ध्या का आयोजन भी होगा जिसमें साधकों को शास्त्रीय आर्य गायिका श्रीमती मीनाक्षी पंवार जी के गीतों को सुनने का अवसर मिलेगा। 13 मई, 2018 को स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती स्मृति समारोह भी सम्पन्न किया जायेगा।

आश्रम में प्रत्येक माह की 20 से 26 तारीख तक प्राकृतिक चिकित्सा पर आधारित एक सप्ताह का कायाकल्प शिविर डा. विनोद कुमार शर्मा के मार्गदर्शन में आयोजित किया जाता है। इस चिकित्सा शिविर में देश के अनेक भागों से लोग आते हैं और लाभान्वित होते हैं। यह शिविर भी लम्बी अवधि से सफलतापूर्वक चल रहा है। ओ३म् शम्।

तुम क्या हो

—महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

"संसार में लंगड़े, लूले और अन्धे—असंख्य हैं।"

"यह आप क्या कहते हैं? जनगणना इसके विरुद्ध कहती है और यूँ भी हमारे ही नगर में दो लंगड़ों और एक अन्धे के सिवाय सब हष्ट—पुष्ट और स्वस्थ हैं।"

"नहीं, अन्धे देखने वालों की अपेक्षा अधिक हैं। टाँगों वालों की अपेक्षा लूले—लंगड़े अधिक हैं।"

"गलत है, झूठ है। यह आप कैसे कह सकते हैं?"

सुनो! एक व्यक्ति के तीन लड़के थे। एक लंगड़ा और लूला था। उसके हाथ थे, न पाँव। वह अपने माता—पिता की कुछ भी सेवा नहीं कर सकता था। दूसरा अन्धा था, इसलिए वह भी माता—पिता की सेवा करने में विवश था, परन्तु तीसरा लड़का स्वस्थ, सुन्दर और बलवान् था। वही अपने माता—पिता की सेवा करता था और मान—सम्मान पाता था।

इसी प्रकार संसार में तीन प्रकार के मनुष्य हैं—

1. एक वो हैं, जो आलसी, कंजूस और पापी हैं।
2. दूसरे वे हैं, जो विषय—लम्पट हैं, विषयों में फँसे हुए हैं।
3. तीसरे वे हैं, जो उदार हैं, बुद्धिमान् हैं और प्रत्येक की सहायता करने के लिए तैयार हैं।

अब देखो! जो आलसी, कंजूस और पापी हैं, वे तो लंगड़े और लूले हैं, क्योंकि वे न तो कहीं धर्मोपदेश सुनने जाते हैं और न हाथ से कुछ दान देते हैं। हाँ, घर पर ही बैठे पाप करते रहते हैं। ऐसे लोग अपने पिता परमेश्वर की कोई सेवा नहीं कर सकते।

जो विषय लम्पट हैं, विषयों में फँसे हुए हैं। वही अन्धे हैं, क्योंकि वे भविष्य के विचार से आँखे बन्द किये हुए अपना विनाश आप ही कर रहे हैं। उनकी आँखों के आगे भोग—विलास और संसार के दूसरे पापों का पर्दा पड़ा रहता है, जिससे न तो वे अपने प्यारे पिता परमेश्वर को ही देख सकते हैं और न ही उनके हृदय में किसी की सेवा करने का विचार आ सकता है। ऐसे लोग सच्चे अर्थों में अन्धे हैं।

शेष रहे उदार, बुद्धिमान् और दानी। केवल ये ही स्वस्थ, सुन्दर और बलवान् हैं। ये हाथों से दान देते हैं, पाँवों से चलकर धार्मिक मेलों मे जाते हैं, दुःखियों की सहायता करते हैं। ये बेबसों, अनाथ और पीड़ित लोगों की सहायता देते हैं और इस प्रकार अपने प्यारे पिता की सेवा करते हैं, ऐसे ही लोग वास्तव में मान—सम्मान पाते हैं। ईश्वर उनसे प्यार करता है और इन्हें ज्ञान देकर वह पद प्रदान करता है, जिसे मोक्ष कहते हैं।

अच्छा! अब तीनों प्रकार के लोगों की दृष्टि दौड़ाकर बताओ कि संसार में लंगड़े, लूले और अन्धे अधिक हैं, या स्वस्थ?

"इस हिसाब से तो बहुत कम लोग स्वस्थ दिखाई देते हैं।"

"लोगों को छोड़ों, तुम अपने आपको देखो कि तुम लंगड़े हो, लूले हो या अन्धे हो या स्वस्थ?" इस प्रश्न का कुछ उत्तर न मिलते देखकर पुनः प्रश्न होता है यहि तुम अब तक लंगड़े—लूले या अन्धे थे तो अब कोशिश करो कि तुम स्वस्थ हो जाओ और अपने पिता की सेवा करो।

रहस्योद्घाटनः हनुमान जन्म

–श्री ईश्वरी प्रसाद प्रेम

महर्षि अगस्त्य आज आश्रम पर स्वयं पधारे हैं। स्वर्ण प्रतिमा सी आभामय, निष्कलंक चन्द्रमा की भांति ज्योतिष्मान् अंजना को उन्होंने सिर झुकाये चिन्ता–निमग्न मुद्रा में देखा और समीप ही उदासी में डूबी उसकी सखी वासन्ती को। एक बार तो ऋषि भी इस दृश्य को देख मर्माहत हो उठे, पर शीघ्र ही उन्होंने अपने को संभाल लिया। बड़ी ही प्रशान्त मुद्रा और संयत वाणी में वे देवी अंजना को सम्बोधित कर रहे थे– "पुत्री! तुम्हें चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारा यह कष्ट मेरी योजना का अंग है। तुम लोगों का 12 वर्षीय ब्रह्मचर्य रूप तप भी मेरे ही निर्देश के क्रम में था, क्या तुम्हें इस रहस्य का कुछ ज्ञान है?"

अंजना ने पति द्वारा प्रेषित पत्र जो 'सुहागरात' के दिन उसे मिला था, और जिसे उसने यत्नपूर्वक संभाल कर रख छोड़ा था, ऋषि के हाथों में थमा दिया।

मुनिवर मुस्काये– "ठीक–ठीक! तो वह दिन आज आ गया है, जब इस तपस्या का रहस्य तुम जान सकोगी। प्रिय पुत्र पवन जी ने पत्र में वह सब न लिखकर ठीक ही सोचा, पता नहीं पत्र भूल से किसी के हाथ पड़ जाता।" पुनः वासन्ती की ओर संकेत करके वे बोले– "पुत्री वासन्ती को तो मैं जानता हूँ वह तुम्हारे निकट दो देह एक प्राण के तुल्य है।" अतः उसकी उपस्थिति में किसी रहस्य का उद्घाटन करने में मुझे कोई झिझक नहीं करनी चाहिए, क्यों पुत्री अंजना?"

"गुरुदेव! आप जो कहना चाहें निःसंकोच कहें। मुझमें और वासन्ती में कोई भेद नहीं है।" अंजना ने आश्वस्त किया।

तो पुत्री! बात यह लगभग 25 वर्ष पुरानी है। पवन जी की आयु भी तब लगभग 14–15 रही होगी। संध्या होने को थी। मैं गुरुकुल के एक प्रकोष्ठ में बैठा किसी वैज्ञानिक–अन्वेषण क्रिया में व्यस्त था कि अकस्मात् कुछ दर्द भरी चीखें सुन पड़ीं। कुछ समय में यह कोलाहल और बढ़ गया। आहत व्यक्तियों के करुण–क्रन्दन से आश्रम का वातावरण गूंज उठा। मेरे लिए वह नया अनुभव नहीं था, पर किशोर पवन का हृदय जैसे स्वयं से विद्रोह कर उठा। आश्रम नियमों की अवज्ञा करके भी वह सीधा मेरे कक्ष में दौड़ा आया। वह बुरी तरह घबरा रहा था। मैंने उसे ढाढस दिया। पूछा– "वत्स! बोलो, बात क्या है?" बड़ी देर में साहस बटोर कर वह बोला– "गुरुदेव यह आर्त्तनाद, यह करुण–क्रन्दन क्या है? मेरे कानों के पर्दे फटे जा रहे हैं, भगवन्।"

'और पुत्री अंजने! पवन की इस भावोद्रेक युक्त जिज्ञासा के साथ ही मुझे लगा– ईश्वर ने मेरी आत्म–पुकार को सुन लिया, जिस क्षत्रिय आत्मा की मुझे आवश्यकता थी, वह आज मुझे मिल गई। और तब प्रगट में मैंने कहा– "प्रिय पुत्र! हम लोगों के लिए इसमें कुछ भी नयापन नहीं है। हाँ, तुम्हारे आश्रम में आने के बाद इधर के क्षेत्र में यह शायद पहली घटना है। जहाँ से ये आवाजें आ रही हैं, वहां लगभग 1 मील पर मुनियों के कई छोटे–छोटे आश्रम हैं, जहाँ वे कन्द–मूल, फल खाकर वानप्रस्थ जीवन की स्वाध्याय और सत्संग मूलक साधना और तितीक्षा करते हैं। वहाँ से कुछ दूरी पर ही राक्षसों के राजा, लंकाधिपति रावण की सैनिक छाबनी है। वानर राष्ट्र के स्वामी महाराज बाली के साथ रावण की सन्धि के अनुसार ही यह छाबनी वहाँ है। समय–समय पर ये राक्षस कर वसूली के मिष ऋषियों के इन आश्रमों को ध्वस्त करते और अनेक विधि उन्हें प्रपीड़ित करते हैं,

आज वैसा ही दुर्दिन उपस्थित हुआ प्रतीत होता है।'

'पुत्रि अंजना! किशोर पवन के मानस में जैसे क्रान्ति का एक तूफान उठ खड़ा हुआ हो, बड़े ही भावावेश में वह बोला– 'गुरुदेव! क्षमा करें, तब इन वैज्ञानिक शोधों और परीक्षणों का क्या लाभ? गुरुदेव, आपने ही तो एक बार कहा था कि विज्ञान का उद्देश्य तो सद्ज्ञान का रक्षण है। पर जब सद्ज्ञान (वेदज्ञान) के संरक्षण और संवाहक मुनियों को ही नष्ट किया जा रहा है और विज्ञान उनकी रक्षा न कर सके तो उसका क्या उपयोग?

'पर पुत्र! हमने ब्राह्मण धर्म की दीक्षा ली है। हमारा कार्य ज्ञान–विज्ञान की समुन्नति और विकास है। हमारी वैज्ञानिक उपलब्धियों के उपयोग के लिए हमें किसी सच्ची क्षत्रिय आत्मा की प्रतीक्षा है।'

और तब पवन ने बिना एक क्षण लगाये ओजस्वी स्वर में कहा– 'गुरुदेव! आज्ञा दीजिए तब मुझे क्या करना है?'

मेरा हृदय प्रसन्नता से भर गया पुत्री! और तब मैंने और अधिक दृढ़ स्वर में कहा– 'पर मुझे इस कार्य के लिए एक महावीर चाहिए, प्यारे पुत्र!'

महावीर' से आपका अभिप्राय? किशोर पवन की जिज्ञासा थी।

"पुत्र! किसी राजा, महाराजा या सम्राट पर विजय पाना केवल वीरता है, पर कामदेव के शत–शत आकर्षणों पर विजय पाने वाला सच्चा महावीर है।" मेरे इस उत्तर के साथ ही प्रिय पवनजी ने विवाह न करने और आजन्म ब्रह्मचारी रहकर असुर–नाश के महाव्रत की दीक्षा ली।

पर शायद अवस्था के विचार से या किसी प्रकार कहो पवन के इस संकल्प के पीछे भावावेश का आधिक्य था। तुम्हारा चित्र देखकर तुम्हारे सौन्दर्य और सद्गुणों के प्रभाव में उसे अपना व्रत विस्मृत हो गया। वह तुम्हारे साथ विवाह–सम्बन्ध की स्वीकृति दे बैठा। बाद में उसे उन्हीं ध्वस्त ऋषि आश्रमों के समीप से गुजरने पर अपना व्रत स्मरण हो आया। वह छटपटाने लगा। प्रायश्चित की भावना लेकर वह मेरे समीप आया। मुझे भी पहले तो कुछ सूझ नहीं पड़ा पर बाद में ईश कृपा से तुरन्त ही मुझे प्रेरणा हुई, उसी के अनुसार मैंने 12 वर्ष तक तुम दोनों की ब्रह्मचर्य–साधना के पश्चात् एक 'महावीर' का जन्म देने का विधान बताया। यह है पुत्री संक्षेप में तुम्हारी संयम–साधना का रहस्य। और अब तुम्हारे इस निर्वासन के पीछे भी मेरी ही योजना काम कर रही है। वानर जाति के कुछ युवक मेरे ही संकेत पर विद्रोह कर रहे हैं। यह सब जान–बूझकर किया गया है ताकि पवनजी कुछ समय उधर ही उलझे रहे। तुम्हारे इस निर्वासन के दो बड़े लाभ है– गर्भगत बालक पारिवारिक जीवन के प्रति निरीह और ममता शून्य होने का संस्कार ले सकेगा साथ ही यहाँ आश्रम के कठोर श्रम–साध्य जीवन के संस्कारों से संस्कारित हो सकेगा। याद रखो गर्भावस्था और उसके पश्चात् 1 वर्ष के समय के संस्कार बालक के जीवन में अमिट रहते हैं। बालक एक–डेढ़ वर्ष का हो जायगा तभी प्रिय पवन जी से तुम्हारी भेट हो सकेगी। अंजना अब प्रसन्न और निश्चिन्त थी। महर्षि का उसने बार–बार धन्यवाद किया।

अंजना देवी का प्रसव समय उपस्थित है और देखते–देखते महर्षि अगस्त्य की व्यवस्था में इस पुनीत आश्रम पर हमारे चरितनायक, माँ भारती के यशस्वी पुत्र, आर्य संस्कृति के कीर्तिस्तम्भ महावीर हनुमान ने जन्म ले लिया।

चैत्र मास वदि अष्टमी पुष्य नक्षत्र प्रमाण।
दिन मंगल परभात को जन्म लिया हनुमान।।
काले केश सुहावने मस्तक चन्द्र समान।
दीर्घ हनू से भासता महावीर बलवान्।।
देख अंजना बाल–मुख करती निज प्रभु ध्यान।
कठिन समय रक्षा करो इसकी हे भगवान।।
बार–बार करती रही शत मुख ऋषि गुणगान।
जिनकी अनुपम साध से भारत मही महान्।।

बालक जन्म समय ही बड़ा दृढ़ाङ्ग., मेधावी और अपूर्व तेज–स्थिता से युक्त प्रतीत होता था। महर्षि ने देखा तो प्रसन्नता से भर उठे। प्रभु का कोटिशः धन्यवाद किया, उन्होंने। उनका प्रयोग सफल था। वे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे थे।

बाल की दीर्घ हनु (ठोड़ी) एक विशेष आकर्षण का केन्द्र थी। निश्चय ही वह बालक के स्वात्माभिमान और महावीरत्व का प्रतीक थी। महर्षि ने इसी को आधार मानकर बालक का नामकरण हनुमान (ठोढ़ी वाला) किया।

शुद्ध हनुमच्चरित से साभार

Man And His Four Wives

by Shri S.K. Chibber

There was a man with four wives. He loved his fourth wife the most and took a great care of her and gave her the best.

He also loved his third wife and always wanted to show her off to his friends. However, he was always had a fear that she might runaway with some other man.

He loved his second wife too. Whenever he faced some problems, he always turned to his second wife and she would always help him out.

He did not love his first wife though she loved him deeply, was very loyal to him, and took great care of him. One day the man fell very ill and knew that he was going to die soon.

He told himself "I have four wives with me. I will take one of them along with me when I die to keep company in my death."

Thus he asked the fourth wife to die along with him and keep company. "No way!" she replied and walked away without another word.

He asked his third wife. She said "Life is so good over here. I am going to remarry when you die".

He than asked his second wife. She said "I am sorry. I can't help you this time round. At the most, I can only accompany you till your grave."

By now his heart sank and he turned cold. Then a voice called out. "I will leave with you. I will follow you no matter where you go.".

The man looked up and there was his first wife. She was so skinny almost like she suffered from malnutrition. Greatly grieved. The man said, "I should have taken much better care of you while I could have!" Actually, we all have four wives in our lives.

a) The fourth wife is our body. No matter how much time and effort we lavish in making it look good, it will leave us when we die.

b) The third wife is our possession, status, and wealth wken we die, they go to others.

c) The second wife is our family and friends. No matter how close they had been there for us when we are alive, the furthest they can stay by us is up to the grave.

d) The first wife is our soul, neglected in our pursuit of material wealth and pleasure. It is actually the only thing that follows us wherever we go.

धर्म का पांचवा लक्षण शौच

—डॉ० प्रियंवदा वेदभारती

ईशुचिर् पूतीभावे धातु से शौच शब्द सिद्ध होता है शौच का अर्थ है पवित्रता। यह दो प्रकार की होती है बाह्य और आन्तरिक। बाह्य पवित्रता शरीर और स्थान की होती है। हमारा शरीर स्वच्छ व पवित्र रहे इसके लिये हमें व्यक्तिगत स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना होता है। नित्य नियमित समय पर उठकर शौचादि से निवृत्त होकर व्यायामादि करने से, स्नानादि करने से, स्वच्छ वस्त्र धारण करने से और शुद्ध स्वच्छ व पवित्र सात्त्विक भोजन करने से शारीरिक स्वच्छता होती है। हमारे आवास व व्यवसाय के स्थान भी स्वच्छ होने आवश्यक हैं। घर स्वच्छ हो, आंगन स्वच्छ हो, रसोई स्वच्छ हो, शौचालय स्नानागार उससे भी अधिक स्वच्छ हो। कमरों में सभी वस्तुयें व्यवस्थित रही हों, रसोई और घर के आस—पास कूड़े—कचरे का ढेर न लगा हो, मक्खियों और चूहों की भरमार न हो, नित्य प्रति हवन होता हो ऐसा दुर्गन्ध रहित शुद्ध वातावरण बाह्य पवित्रता के अन्तर्गत आता है। यह बाहर की शुद्धि मिट्टी, साबुन, जल आदि से होती है। मनुस्मृति के पंचम अध्याय में जहाँ किससे क्या शुद्ध होता है की विस्तार से चर्चा है वहाँ यह भी कहा गया—

सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्।
योऽर्थेशुचिर्हिसशुचिर्नमृद्वारिशुचिः शुचिः।।—मनु० 5।106

समस्त शुद्धियों में सबसे बड़ी शुद्धि धन की है, अर्थात् जिसने अन्याय से किसी का धन नहीं लिया है वही शुद्ध है। जो केवल मिट्टी, जल आदि से शुद्धि का ध्यान रखता है पर धन से शुद्ध नहीं वह मनु की दृष्टि में कथमपि शुद्ध नहीं। अस्तु!

बाह्य पवित्रता के पश्चात् आती है आन्तरिक पवित्रता। आन्तरिक पवित्रता बाहरी पवित्रता से भी अधिक महत्त्व रखती है। आन्तरिक पवित्रता तब होती है जब चित्त में विद्यमान मद, ईर्ष्या, असूया आदि मलों को धोया जाता है। मन को शुद्ध—पवित्र—शिव संकल्प वाला बनाया जाता है। योगदर्शन के निम्न सूत्र—

"मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणांसुखदुः
खपुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश्चित्तप्रसादनम्"

के आधार पर सुखियों के साथ मैत्री, दुःखियों के प्रति करुणा, पुण्यात्माओं के प्रति हर्ष, पापात्माओं के प्रति उपेक्षा या उदासीनता के साथ ही 'मनः सत्येन शुध्यति' सत्यभाषण, सत्याचरण आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय और सत्संग मन की पवित्रता के लिए विशेष हितकारी है।

मन—वचन—कर्म की यह शुचिता मानव को बहुत ऊँचा उठा देती है। शुचिता का उपासक बाह्य सजावट से, फैशन से दूर रहकर आत्मतत्त्व के चिन्तन में लीन रहता है। आत्मिक शक्ति बढ़ाने का ही सतत प्रयास करता है। मानव जितना ही अधिक अपनी जीवन यात्रा में इन दोनों शुचिताओं का पालन करेगा उतना ही उसका यश एवं कीर्ति बढ़ेगी।

आप्त वचन

शौचं च द्विविधं प्रोक्तं, बाह्यमाभ्यन्तरं तथा।
मृज्जलाभ्यां स्मृतं बाह्यं, भावशुद्धिस्तथाऽन्तरम्।।

अर्थ— शौच (शुद्धिः=शोधन) दो प्रकार का कहा गया है— बाहर का और भीतर का। मिट्टी और जल से बाहर की शुद्धि होती हैं, जबकि भावों को शुद्ध रखना अन्दर की शुद्धि है।

ज्ञानं तपोऽग्निराहारो मृन्मनो वार्युपाञ्जनम्।
वायुः कर्मार्ककालौ च, शुद्धेः कर्तृणि देहिनाम्।।

अर्थ— ज्ञान, तपस्या, अग्नि, भोजन, मिट्टी, मन, जल, लेपन, वायु, कर्म, सूर्य और समय ये पदार्थ देहधारियों की शुद्धि के साधन हैं।

धर्म का छटा लक्षण इन्द्रियनिग्रह

—डॉ० प्रियंवदा वेदभारती

मनुप्रोक्त धर्म के लक्षणों में इन्द्रियनिग्रह का छठा स्थान है। आत्मा को ज्ञान पहुँचाने वाली पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ है– चक्षु, श्रोत्र, नासिका, त्वचा, रसना। आत्मा के आदेश पर काम करने वाली पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं– वाक्–पाणि–पाद–पायु–उपस्थ। इन उभयविध इन्द्रियों के अपने–अपने विषय हैं जिनमें ये दिन–रात विचरण करती हैं। इन्द्रियों को बुरे विषयों से हटाकर पवित्र विषयों की ओर प्रेरित करना ही इन्द्रियनिग्रह है।

बन्धुओ! परमात्मा ने शरीर रूपी नौका को खेने के लिए मनुष्य रूपी खेवट को दस इन्द्रियाँ प्रदान की हैं जो चप्पू का काम करती हैं यदि इन इन्द्रियों का सदुपयोग होता रहे तो यह शरीर दिव्य शरीर बन जाता है और दुरुपयोग होने से यही शरीर अदिव्य भी बन जाता है। शास्त्रकारों ने इसीलिए बड़ी सुन्दर बात कही–

इन्द्रियाणां विचरतां विषयेष्वपहारिषु
संयमे यत्नमातिष्ठेद् विद्वान् यन्तेव वाजिनाम्।

इसका अर्थ है– विषयों में विचरण करने वाली इन्द्रियों का समझदार व्यक्ति उसी प्रकार नियन्त्रण करता है जैसे एक सारथि घोड़े की लगाम को। इन्द्रियों के नियन्त्रण के विषय में इससे बढ़कर (सुन्दर) दूसरा दृष्टान्त मिलना कठिन है। घोड़े पर सवार सारथि का सारा ध्यान घोड़े की गति पर रहता है। यदि उसका ध्यान भंग हुआ तो पतन निश्चित ही नहीं सुनिश्चित है। ठीक इसी प्रकार जागरूक मनुष्य अपनी इन्द्रियों पर निरन्तर दृष्टिपात करते रहें अन्यथा उनका पतन भी सुनिश्चित है।

सन्ध्या के इन्द्रिय स्पर्श और मार्जन मन्त्रों में इन्द्रियों को पवित्र एवं बलवान् बनाने की प्रार्थनाएँ की गई है ये प्रार्थनाएँ इस बात की सूचक हैं कि इन्द्रियों को पवित्र नियन्त्रित करना पड़ता है ये स्वयं सन्मार्ग की ओर चलें यह आवश्यक नहीं। ज्ञानेन्द्रियों को प्रशिक्षित व नियन्त्रित करने के लिए हमें इन्हें इस प्रकार अभ्यस्त करना चाहिए कि ये बाह्य विषयों का यथार्थ ज्ञान देवमन को करायें पर उनमें आसक्त न हों।

उदाहरणार्थ– नासिका से हम सुगन्ध या दुर्गन्ध का ज्ञान प्राप्त करते हैं पर यदि हम सुगन्ध में इतने आसक्त हो जायें कि अमुक फूल की सुगन्ध लेने के लिए बार–बार उसके पास ही जायें या उस फूल के इत्र को तन पर लगाकर उस आसक्ति की आकांक्षा को पूरी करें या अन्य लोगों के तन पर लगी सुगन्ध जो उससे भी अच्छी लग रही है उसे प्राप्त करने के लिए आतुर हो उठें बस ऐसी आसक्ति ही चारित्रिक पतन की ओर ले जाती है। विषयों का ज्ञान हो, उसमें आसक्ति न हो तभी हम सत्कर्म कर पाते हैं। सत्कर्मों के संस्कार जब चित्त पर स्थायी अंकित होते हैं तब अच्छे संस्कार बनते हैं इसलिए ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय दोनों को मन द्वारा नियन्त्रित करते हुए इन्द्रिय निग्रहरूपी धर्म का पालन सभी को करना चाहिए।

बन्धुओ! इन्द्रियनिग्रह के प्रसंग में इतना और बता देना चाहती हूँ कि कुछ लोग इन्द्रियों को नष्ट कर इन्द्रिय को नियन्त्रित करने की बात करते हैं। जैसे कि सुना जाता है बाबा सूरदास ने एक युवती से अपनी आसक्ति हटाने के लिए अपनी आँखों को शलाकाओं से फोड़ डाला इन्द्रियनिग्रह का यह प्रकार कथमपि उचित नहीं। इन्द्रियों का वशीकरण तो मात्र मन के वशीकरण से ही सम्भव है। आशा है मेरे इस संकेत को आप विस्तार से समझ गये होंगे।

कर्म-फल कैसे मिलेगा और कब

—महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

पिता—वत्स! तुमने अपने प्रश्न का कुछ—कुछ उत्तर तो आप ही दे दिया। जिस चोर को इस जन्म में चोरी करने के बदले दण्ड मिला है, उसके विषय में समझना चाहिए कि उसने अपने पूर्वले जन्म में चोरी की थी, इस जन्म में यह उसका फल था। उस कर्म का फल उस समय इसलिए नहीं भोगा कि वह नया कर्म था। हर साल में नये कर्म का फल अगले जन्म में ही मिलता है। अब उस पुरुष के शरीर में मन के साथ पूर्वकृत पाप के संस्कार बीज रूप में आते हैं, इसलिए इस जन्म में वह उस बीज को वृक्ष बना लेता है और उस वृक्ष का फल भी उसे अवश्य मिलता है। अब जो दंड उस चोर को मिलता है, वह वर्तमान जन्म की चोरी का नहीं परन्तु पूर्वले जन्म की चोरी के बदले में है। यदि पिछले जन्म के पाप अधिक हैं और अब की चोरी कम है, तो उसे दण्ड अवश्य वर्तमान चोरी की अपेक्षा अधिक मिलेगा, और यदि पिछले जन्म की चोरी कम और अब की चोरी अधिक तो उसे दण्ड चोरी से कम मिलता है। यदि पिछले जन्म में चोरी की है और इस जन्म में नहीं, तो वह औरों की शत्रुता का शिकार होकर दण्ड पाता है और वह दण्ड उसे उसके पिछले जन्म की चोरी के बदले में मिलता है।

पुत्र— यह बड़ी विचित्र बात है। अब इस पर यह प्रश्न उठता है कि जो चोरी अब की गई है, उसका दण्ड भी क्या पिछले जन्म के कर्म के साथ मिल गया, अथवा क्षमा हो गया अथवा शेष है?

पिता— अब इस जन्म की चोरी उसके लेखे में शेष समझो। इसका फल उसे आगामी जन्म में मिलेगा, यदि उसका नाश इसी जन्म में न किया गया।

पुत्र—वाह! यह और भी खरी रही। अभी तो यही पूछना चाहता था कि इस निर्दोष चोर के लिए, जिसने अभी पाप का बीज ही बोया है वह बीज वृक्ष बनकर फल कैसे लायेगा? परन्तु आपने उससे आगे यह भी कह दिया कि यदि जीते—जी ही इस पाप का नाश न किया गया, तो क्या किये हुए पाप भी किसी प्रकार नष्ट किये जा सकते हैं?

पिता— मैंने तुमसे कहा था कि पिछले जन्म की चोरी के संस्कार शेष रहने से ही इस जन्म में वह चोरी करके उसका दण्ड पाता है। तुम्हारी उपरोक्त बात में तब तो कुछ सार भी रहता, यदि उसने पहले ही अपने दुष्कर्म से पाप का बीज न बोया होता, परन्तु यथार्थ बात तो यह है कि उसने पिछले जन्म में पाप करके बीज बोया, फिर वह बीज धीरे—धीरे वृक्ष बन गया। चाहे फल देने से पहले ही, उस शरीर का अन्त हो जाने के कारण इस वृक्ष का भी उसी समय अन्त क्यों न हो गया हो। अब इस देहधारी जीव के सम्बन्ध में प्रश्न यह पैदा होता है, कि जब उसके उस पाप—रूपी बीज से उत्पन्न हुए वृक्ष का भी वह शरीर छूट जाने के कारण, जिससे उसने पाप किया था, अन्त हो गया, तो बिना वृक्ष के ही वह उसका फल कैसे पायेगा? अब इसका भी उत्तर सुनोः—

जैसे कि एक बीज के दो भाग होते हैंः— एक तो वह संस्कार जो जड़ के समान भूमि में चला जाता है, वह अदृष्ट अर्थात् दिखाई न देने वाला है। दूसरा वह भाग जो भूमि के ऊपर रहता और बढ़ता है। यह दृष्ट है अर्थात् दिखाई देने वाला है या यह समझो कि उसी समय का भोग है। अब संस्कार रूप में जो भाग अदृष्ट है, उससे ही प्रेरित होकर मनुष्य नया कर्म करता और उसके फल को भोगता है। और सुनो! संसार में भी ऐसे वृक्ष और औषधियां अनेक देखने में आती हैं, जो बार—बार कट कर भी फिर उग आती हैं। उनका सिर अथवा तना काट देने पर भी उनकी जड़ गुप्त रूप से पृथ्वी में विद्यमान रहती है और समय पर अनुकूल अवसर पाकर, स्वयमेव फिर फूट पड़ती है, और बढ़कर फल—फूल ले आती है। इसी प्रकार पिछले जन्म का बीज भी गुप्त—रूप में मन की भूमि में पड़ा रहता है और यथासमय वृक्ष बनकर प्रत्यक्ष फल

देता है। देखो! वनो–उपवनों में अनेक वृक्ष तथा औषधियां किसी मनुष्य के लगाये बिना ही उत्पन्न हो जाया करती हैं। उसका कारण भी यही होता है कि बीज तो वहां पहले से ही मिट्टी में दबा रहता है, उगने की ऋतु आते ही, प्रकृति से सामान्य अनुकूल साधन पाकर, वह शीघ्र ही अंकुर ले आता है। घास को नहीं देखा! काट लेते हैं, उखेड़ लेते हैं, परन्तु उसकी जड़े पृथ्वी में रह जाती हैं और प्रायः पचास–पचास फुट तक धरती में गहरी चली जाती हैं। जब पानी पड़ता है, ऋतु और काल अनुकूल होता है, तो वह जड़े फिर से उग जाती हैं और सूखे मैदानों को हरा–भरा कर देती हैं।

पुत्र–पिताजी! दूसरी बात तो अभी रह ही गई– वह यह कि इस जन्म के पापों का नाश भी हो सकता है? यदि ऐसा हो तो अचम्भे की बात होगी, फिर तो यह करजुग भी नहीं रहा। मनुष्य ने पाप कर्म भी कर लिया और उसका फल भी न भोगा। भला कोई किया हुआ कर्म, फल लाये बिना कैसे रह सकता है? यदि यह हो तोः–

जैसी करनी वैसी भरनी का प्रसिद्ध सिद्धान्त भी कहां रहा और

करनी करे तो क्यों डरे, करके क्यों पछताय।
बोये पेड़ बबूल के, तो आम कहां से खाय।।

वाली लोकोक्ति भी झूठी पड़ जाएगी।

पिता–वत्स! अब तुम थक गए होगे, इसके सम्बन्ध में फिर बातचीत करेंगे। अब तुम निश्चित होकर विश्राम करो।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन नालापानी, देहरादून दानदाताओं की सूची

क्र.स.	नाम	धनराशि
1.	श्री बसंत बर्मन, कोलकाटा	501
2.	महक फ्लोरिस्ट, चण्डीगढ़	50,000
3.	श्री कुलदीप सिंह चौहान, नालापानी	500
4.	श्री प्रदीप एवं श्रीमती अंजना, देहरादून	25000
5.	श्रीमती जनक राज गुप्ता, कांदिया	11000
6.	श्री रविन्द्र शर्मा, सिडनी	2000
7.	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा, देहरादून	20000
8.	श्री अनिल गोयल, इलाहाबाद	1600
9.	श्रीमती सुजाता, औरंगाबाद	1000
10.	श्री ओमेन्द्र पाल सिंह, उधमसिंहनगर	700
11.	श्री मंजीत सिंह गुलिया	1000
12.	श्री सत्यपाल आर्य, दिल्ली	5000
13.	श्री बलदेव सिंह धीमान, हरियाणा	1100
14.	श्री प्रेमबल्लभ, देहरादून	500
15.	सुश्री रेणु शाह, नालापानी	3000
16.	श्री कुलदीप सिंह एडवोकेट, देहरादून	1000
17.	श्री आलोक कुमार, देहरादून	500
18.	कर्नल सुधीर साहनी, नासिक	1100
19.	श्रीमती विमला देवी पत्नी श्री सतवीर धनखड़	5100
20.	श्री अतुल गुप्ता, रुड़की	5100
21.	श्री सजल बंसल व कुमारी शानवी, दे.दून	2100
22.	आर्य समाज जगाधरी	700
23.	श्री कमल देवगन, लुधियाना	2000
24.	डॉ० श्रीमती बीना सहगल, पंचकुला	500
25.	डॉ० सरोज मिंगलानी, चण्डीगढ़	1000
26.	डॉ० बी० कुमार, देहरादून	500
27.	श्री राघवेन्द्र सिंह, किच्छा	501
28.	श्री कृष्ण लाल ढंड, पाँवटा साहिब	1200
29.	आचार्य आशीष जी, तपोवन देहरादून	1100
30.	श्री एन.एस. वालिया, देहरादून	2100
31.	श्री आर०पी० पाहवा, दिल्ली	700
32.	श्री गोविन्द सिंह भण्डारी, बागेश्वर	500
33.	श्री सीताराम कालरा, नई दिल्ली	2000
34.	श्री वेद मिंगलानी, दिल्ली	1500
35.	श्री बलराज सिंह, दिल्ली	500
36.	श्री इन्द्रजीत मल्होत्रा, देहरादून	2100
37.	श्री प्रेम बजाज, दिल्ली	1100
38.	श्रीमती सुदेश सोनी, गुरुग्राम	3100
39.	श्री कुणाल खेरा, जालंधर	1500
30.	श्री प्रेम प्रकाश शर्मा, देहरादून	10000
31.	श्री गोविन्द राम, देहरादून	1000
32.	श्री सत्यप्रकाश गोयल	11000

आचार्य राजवीर शास्त्री और उनके द्वारा प्रणीत योगदर्शन भाष्य की विशेषताएं

—डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

आचार्य राजवीर शास्त्री का जन्म उत्तरप्रदेश प्रान्त के गाजियाबाद जनपद के फजलगढ़ नामक ग्राम में एक साधारण आर्य परिवार में 04 अप्रैल, 1938 को हुआ था। आपके पिता श्री शिवचरणदास और माता श्रीमती मनसा देवी थीं। इस नश्वर शरीर को त्याग कर दिनांक 25 सितम्बर 2014 को आपने महाप्रयाण किया। आप गुरुकुल झज्जर के प्रारम्भिक सुयोग्यतम स्नातक थे। आपने पातंजल योग दर्शन और उपनिषदों का भाष्य किया। प्रक्षेपरहित शुद्ध मनुप्रोक्त धर्मशास्त्र की समीक्षा सहित व्याख्या व सम्पादन किया। सायण–भाष्य का समीक्षा लेखन और ऋग्वेदभाष्यकार (प्रथम दो भाग का) सम्पादन किया। वैदिक कोश का प्रणयन किया। 'दयानन्द सन्देश' नामक मासिक पत्रिका का आपने अनेक दशकों तक बिना कोई वेतन लिए सम्पादन किया। आपके सम्पादन में अनेक विषयों पर उच्चकोटि के संग्रहणीय विशेषांक प्रकाशित किए गए। दर्शनशास्त्र को जानने के लिए हमें दर्शन का अर्थ जानना होगा। 'दर्शन' शब्द का व्युत्पित्तिपरक अर्थ है–दृश्यते अनेन इति दर्शनम् अर्थात् जिसके द्वारा देखा जाए, उसे दर्शन कहते हैं। कौन पदार्थ देखा जाए? वस्तु का सत्यभूत तात्त्विक स्वरूप। हम कौन हैं? कहाँ से आऐ हैं? इस सर्वतो दृश्यमान् जगत् का सच्चा स्वरूप क्या है? इसकी सृष्टि का कौन कारण है? यह चेतन है या अचेतन? इस संसार में हमारे लिए कौन सा सुन्दर साधन मार्ग है? आदि प्रश्नों का समुचित उत्तर देना दर्शन का प्रधान उद्देश्य है। दर्शन को हम शास्त्र कहते हैं। शास्त्र शब्द की व्युत्पित्ति आगम ग्रन्थों में इस प्रकार बताई गई है–

शासनात् शंसनात् शास्त्रं
शास्त्रमित्यभिधीयते। शासनं द्विविधं
प्रोक्तं शास्त्रालक्षणवेदिभिः। शंसनं
भूतवस्त्वेकविषयं न क्रियापरम्।

'शास्त्र' शब्द की व्युत्पत्ति दो प्रकार से की जाती है। प्रथम 'शास्' आज्ञा करना धातु से। शासन करने वाले शास्त्र विधिरूप तथा निषेधरूप होने से दो प्रकार के होते हैं। अतः 'शासन' अर्थ में 'शास्त्र' शब्द का प्रयोग धर्मशास्त्र के लिए उपयुक्त माना गया है। द्वितीय 'शंस्' धातु से जिसका अर्थ है प्रकट करना या वर्णन करना। **शंसक**–शास्त्र क्रियापरक होता है। दर्शनशास्त्र में **शंसन**–शास्त्र के अर्थ में शास्त्र का प्रयोग 'दर्शन' के साथ होता है। भारतीय तत्त्वज्ञान भारतीय धर्मज्ञान के समान ही उदार और व्यापक व विवेचनात्मक रहा है जिसकी धारा वैदिक काल से ही अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित होती चली आ रही है। दर्शनों का आदि बीजरूप ज्ञान विशेषकर योगदर्शन का मूल हमें वेदों में मिलता है। सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने जो हमारा आदि गुरु है मनुष्यों के कल्याण के लिए वेद का उपदेश किया जिसमें दर्शन–विद्या का स्रोत भी मिलता है। ऋग्वेद के एक मंत्र में कहा गया है कि कौन जानता है? कौन उपदेश करता है? हमारा जन्म कैसे हुआ है? यह सृष्टि कैसे बनी? इत्यादि मूल

प्रश्न और उनके उत्तर हमें वेद से मिलते हैं। मानव ने इस विद्या को वेद से ही प्राप्त किया है। यजुर्वेद के एक मंत्र में कहा गया है कि मृत्यु त्रिविध दुःखों से छूटने के लिए विद्या तथा अविद्या दोनों को जानना परमावश्यक है। अविद्या =कर्म तथा उपासना से दुःख से छूटकर विद्या के द्वारा जीवात्म मोक्ष को प्राप्त करता है। योगदर्शन का प्रणयन महर्षि पतंजलि ने किया। याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार योग के वक्ता हिरण्यगर्भ हैं और पतंजलि ने योग का केवल अनुसंधान किया है अर्थात् प्रतिपादित शास्त्र का उपदेश मात्र किया है। अतः वे योग के प्रवर्तक न होकर प्रचारक या संशोधक मात्र हैं। उनके योगसूत्रों पर महर्षि व्यास और भोज द्वारा भाष्य किए गए परन्तु 'व्यासभाष्य' को अत्यन्त प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है। व्यासभाष्य स्वयं बहुत ही गूढ़ार्थ लिए हुए है, अतः इसके अर्थ को समझने के लिए वाचस्पति मिश्र ने 'तत्त्ववैशारदी' और विज्ञान भिक्षु ने 'योगवार्तिक' की रचना की। राघवानन्द सरस्वती द्वारा तत्त्ववैशारदी की भी टीका की गई जो 'पातंजल रहस्य' के नाम से प्रसिद्ध है। विज्ञानभिक्षु का 'योगवार्तिक' भाष्य का विवेचन ही नहीं करता है, अपितु यह 'योगवार्तिक' के व्याख्यानों की पर्याप्त समालोचना भी करता है। विज्ञानभिक्षु ने 'योगसारसंग्रह' में भी योग के सिद्धान्तों का सारांश उपस्थित किया है। प्रसिद्ध सांख्य– योगाचार्य श्री हरिहरानन्द आरण्य ने इस भाष्य पर 'भास्वती' के नाम से टीका लिखी है। इनके अतिरिक्त कई अन्य विद्वानों ने योगसूत्रों पर वृत्ति लिखी है जिनमें निम्न का विवरण उपलब्ध होता है–

1. भोजदेव कृत राजमार्तण्डवृत्ति (प्रसिद्ध नाम भोजवृत्ति)
2. भावगणेश की वृत्ति प्रदीपवृत्ति
3. नागोजी भट्ट की वृत्ति 'लध्वी' और 'बृहती'
4. रामानन्द यति की वृत्ति मणिप्रभा
5. सदाशिवेन्द्र सरस्वती कृत योगसुधाकर
6. अनन्तपण्डित की वृत्ति योगचन्द्रिका
7. नारायणतीर्थकृत सिद्धान्तचन्द्रिका वृत्ति

योगदर्शन के व्यासभाष्य को दर्शनकारों द्वारा सर्वोत्तम माना गया है और इसको आधार मानते हुए निम्न पांच विद्वानों ने देवभाषा संस्कृत में इस पर अपनी टीकाएं लिखी हैं–

1. वाचस्पतिमिश्रकृत तत्त्ववैशारदी
2. शंकराचार्यकृत पातंजलयोगभाष्यविवरण
3. विज्ञानभिक्षुकृत योगवार्त्तिक
4. हरिहरानन्दकृत भास्वती
5. राघवानन्दकृतपातंजलरहस्यम् व्यासभाष्य के आधार पर अनेक विद्वानों ने आर्यभाषा में अपने व्याख्यान ग्रन्थ लिखे हैं। ये विद्वान् है–

1. स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक 2. स्वामी विज्ञानाश्रम 3. आचार्य राजवीर शास्त्री 4. स्वामी सत्यपति परिव्राजक 5. आर्यमुनि 6. आचार्य उदयवीर शास्त्री 7. आचार्य ज्ञानेश्वर 8. स्वामी रामस्वरूप 9. स्वामी ओमानन्द 10. सतीश आर्य 11. स्वामी ब्रह्मलीन मुनि 12. स्वामी हरिहरानन्द आरण्य 13. श्री रमाशंकर त्रिपाठी 14. श्री सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव आदि। इनमें से पूर्ववर्ती दश विद्वान् वैदिक विचारधारा के हैं और शेष अन्य विद्वान् पौराणिक जगत् से सम्बन्ध रखते हैं। उपरोक्त सभी विद्वानों ने अपनी विद्वता का परिचय देते हुए योगदर्शन का भाष्य करते हुए अपना–अपना योगदान दिया है, परन्तु हम इस लेख के माध्यम से आचार्य राजवीर शास्त्री द्वारा इस विषय पर किए गए कार्य की समीक्षा करेंगे।

महर्षि दयानन्द ने यद्यपि योगदर्शन का भाष्य करते हुए कोई स्वतंत्र ग्रन्थ नहीं लिखा है, परन्तु प्रसंगवशात् योगविद्या पर बहुत कुछ लिखा

है। इनका संकलन आचार्य राजवीर शास्त्री और स्वामी विज्ञानाश्रम जी ने अपने– अपने भाष्य में यथास्थान किया है। इस लेख में हम आचार्य राजवीर शास्त्री के योगदर्शन भाष्य की विशेषताओं पर विचार करेंगे।

आचार्य राजवीर शास्त्री की मान्यता है कि ''दर्शनों के विना वेद–मंत्रों की व्याख्या करना कदापि सम्भव नहीं है। जैसे वेद–मंत्रों में 'सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्रसाक्षः' (यजु०), 'विद्ययामृतश्नुते' (यजु०), 'युञ्जते मनः' (ऋक्०) इत्यादि में पठित पुरुष, विद्या, अविद्या, मनादि शब्दों की परिभाषा दर्शनों में ही मिलती है। परमात्मा के सच्चे स्वरूप का बोध दर्शनों की व्याख्या के बिना समझा ही नहीं जा सकता है। वेदोक्त 'अकायम्', 'शुद्धम्', 'अपापविद्धम्' इत्यादि परमेश्वर के लिए प्रयुक्त पदों की व्याख्या ही योगदर्शन में क्लेश, कर्म, विपाकाशय से रहित पुरुषविशेष कहकर की है।''

आचार्य राजवीर शास्त्री के भाष्य की विशेषताएंः– 1. पौराणिक जगत् में ईश्वरोपासना के बारे में अनेक मतभेद और भिन्नताएं पायी जाती हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समस्त वैदिक–वाङ्मय के अवगाहन के पश्चात् उसमें से उपासना पद्धति के सत्य स्वरूप पर विचार करते हुए यह निर्णय लिया था कि 'उपासना–काण्ड–विषयक मंत्रो के विषय में पातंजल, सांख्य, वेदान्त शास्त्र और उपनिषदों की रीति से ईश्वर की उपासना जान लेना।' (ऋ०भा०भू० प्रतिज्ञाविषय) आचार्य राजवीर शास्त्री का विचार है कि वर्त्तमान समय में योग के विषय में अत्यधिक भ्रान्तियां फैलायी जा रही हैं। अपने आपको महायोगी बताकर योग के नाम से जो ठग–विद्या चल रही है, उसका निराकरण इस योग भाष्य से हो सकेगा। क्योंकि महर्षि दयानन्द इस युग के महान् योगी हुए हैं और उन्होंने अपने ग्रन्थों में इस दर्शन के पर्याप्त सूत्रों को स्पष्ट किया है। आचार्य जी के इस भाष्य में महर्षि दयानन्द की व्याख्याओं को यथास्थान रखते हुए विषय को सरलतापूर्वक बोधगम्य कराया गया है। 2. पातंजल–योग सूत्रों पर अनेक प्राचीन महर्षियों और व्यास भाष्य संस्कृत भाषा में उपलब्ध होते हैं। ऋषियों के गूढ़ार्थ लिए रहस्यों को ऋषि ही समझ सकते हैं। इसलिए आचार्य जी ने व्यास–भाष्य को अक्षुण्ण तथा शुद्धरूप से प्रकाशित करते हुए, उसका अर्थ आर्य–भाषा में पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत किया है। 3. महर्षि व्यास ने सूत्रगत किस पद की क्या व्याख्या की है, और व्यास–भाष्य के पाठक को यह स्पष्ट हो सके, इसलिए व्यास–भाष्य कोष्ठक [ ] बनाकर सूत्र के पदों का निर्देश किया गया है। 4. इस भाष्य में अनेक जटिल समस्याओं को योगदर्शन तथा व्यास–भाष्य की अन्तः साक्षियों के माध्यम से समझाया गया है। इसके कतिपय उदाहरण निम्न प्रकार से दिए गए हैंः–योगदर्शन में सूत्र 1/2 के भाष्य में जीवात्मा को 'अनन्ता' और सूत्रा 1/9 के भाष्य में 'निष्क्रिय' कहा गया है, जो पाठक को भ्रान्ति में डाल देता है, इसलिए आचार्य जी ने इसकी सुसंगत व्याख्या यथास्थान की है। योगदर्शन में सूत्र 1/19 के भाष्य में विदेहयोगी और प्रकृतिलय योगियों का कथन है, इनका यथार्थ तात्पर्य क्या है? इसकी सुन्दर व्याख्या की गई है। ईश्वर साकार है अथवा निराकार? ईश्वर अवतार लेता है या नहीं? इत्यादि आस्तिक जगत् की जटिल समस्याओं का समाधान योगदर्शन के सूत्र 1/24–26 में किया गया है। ईश्वर का मुख्य नाम क्या है? उपासक को उपासना के समय किस नाम का जप करना चाहिए? इसका उत्तर योगदर्शन के 1/17–28 सूत्रों में स्पष्ट किया गया है। योगदर्शन के सूत्र 1/39 के अनुसार 'यथाभिमतध्यान' का क्या अभिप्राय है, यह स्पष्ट

किया गया है। योगदर्शन के सूत्र 1/45 के अनुसार प्रकृति से भी सूक्ष्मता और भिन्नता को स्पष्ट किया गया है। सूत्र 1/49 के अनुसार वेदज्ञान को सामान्य–ज्ञान क्यों कहा है? यह स्प्ष्ट किया गया है। योगदर्शन के सूत्र 2/5 और 2/33 में वर्णित नवीन वेदान्तियों की अविद्या तथा योग की अविद्या में अन्तर को स्पष्ट किया गया है। सूत्र 2/13 की व्याख्या में स्पष्ट किया गया है कि मनुष्य की आयु पूर्वकर्मों से ही निश्चित होती है। प्रकृति का कार्य–कारणभावस्वरूप सूत्र 2/20 में, जीवात्मा का यथार्थस्वरूप सूत्र 2/20 में और प्राणायाम का यथार्थस्वरूप सूत्र 2/49–51 में स्पष्ट किया गया है। मोक्ष से पुनरावृत्ति के बारे में सूत्र 2/23 और क्या पुनरावृत्ति नहीं होती यह सूत्र 2/25 में स्पष्ट किया गया है। अणिमा आदि सिद्धियां शारीरिक हैं अथवा मानसिक? यह विषय सूत्र 2/43 और 3/45 में स्पष्ट किया गया है। देव, ऋषि और सिद्ध पुरुषों के दर्शन के आशय को सूत्र 2/44 और 3/62 में स्पष्ट किया गया है। 'अनन्त' का अर्थ 'शेषनाग' कदापि नहीं है। इसे सूत्र 2/47 में स्पष्ट किया गया है। ध्यान का यथार्थस्वरूप सूत्र 3/2 में स्पष्ट किया गया है। क्या योगी दूसरों के पूर्वजन्मों को जान सकता है? इस विषय को सूत्र 3/18 में स्पष्ट किया गया है। क्या मरणासन्न व्यक्ति यमराज के दूतों को देखता है? इस विषय को सूत्र 3/23 में स्पष्ट किया गया है। शरीर में जीवात्मा का स्थान कहां है? इस विषय को सूत्र 1/36 और 3/23 में स्पष्ट किया गया है। मोक्ष का यथार्थस्वरूप सूत्र 3/50, 3/55 और 4/34 में स्पष्ट किया गया है। 'जात्यन्तर–परिणाम' का क्या अभिप्राय है? इसे सूत्र 4/34 में स्पष्ट किया गया है। क्या योगी अनेक चित्तों का निर्माण कर सकता है? इसे सूत्र 4/4 में स्पष्ट किया गया है। इसी प्रकार चित्त का परिणाम कैसा है? इस विषय को सूत्र 4/10 में स्पष्ट किया गया है। 5. आचार्य जी ने इस ग्रन्थ के साथ योगदर्शन और व्यासभाष्य के आधार पर एक विस्तृत विषय–निर्देशिका बनाकर प्रस्तुत की है, जो स्वाध्यायशील व्यक्तियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। 6. षड्दर्शनों का समन्वय–महर्षि दयानन्द सरस्वती ने घोषणा की कि दर्शनों में कही भी परस्पर विरोध नहीं है, अपने विषय का वर्णन प्रत्येक शास्त्राकार ने अपने ढंग से किया है। महर्षि लिखते हैंः– ''छः शास्त्रों का अविरोध देखो इस प्रकार है कि जिसके बनाने में कर्मचेष्टा न की जाये। वैशेषिक में– समय न लगे विना बने ही नहीं। न्याय में उपादान कारण न होने से कुछ भी नहीं बन सकता। योग में विद्या, ज्ञानविचार न किया जाये तो नहीं बन सकता और वेदान्त में बनाने वाला न बनाये तो कोई भी पदार्थ उत्पन्न नहीं हो सके। इसलिए सृष्टि छः कारणों से बनती है, उन कारणों की एक–एक व्याख्या एक–एक शास्त्र में है। इसलिए उनमें विरोध कुछ भी नहीं है।'' आचार्य जी ने महर्षि के उक्त विचारों की ही पुष्टि अपने भाष्य में की है। आचार्य जी का मानना था कि ऋषियों के गूढ़ार्थ लिए रहस्यों को ऋषि ही समझ सकते हैं। आचार्य जी एक गृहस्थ होते हुए भी संतो की सभी अहर्ताओं को पूर्ण करते थे। वे विगतमत्सरा, कुम्भीधन्या और अलोलुपा थे। एक प्रकार से उनको योग–ऋषियों की परम्परा में रखा जा सकता है। उनकी दर्शनों में पैनी पैठ थी, जिससे वे इतने उच्चकोटि का भाष्य लिख पाये थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि आचार्य राजवीर शास्त्री के योगदर्शन भाष्य में अनेक विशेषताएं हैं, जिनका उपरोक्त रूप से विस्तृत विवेचन किया गया है। यह भाष्य, अब तक किए गए सभी भाष्यों में एक अप्रतिम स्थान रखता है।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

नालापानी, देहरादून - 248008, दूरभाष: 0135-2787001

ग्रीष्मोत्सव (ऋग्वेद यज्ञ एवं योग साधना शिविर)
वैशाख ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष नवमी से कृष्ण पक्ष त्रयोदशी विक्रमी सम्वत् 2075 तक
तद्नुसार बुधवार 9 मई से रविवार 13 मई 2018 तक मनाया जायेगा।

योग साधना निदेशक- स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती
यज्ञ के ब्रह्मा- डॉ नन्दिता चतुर्वेदी

प्रवचनकर्ता	:	आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य
वेद पाठ	:	पाणिनीय कन्या महाविद्यालय वाराणसी की ब्रह्मचारिणियों द्वारा
यज्ञ एवं अन्य कार्यक्रमों के संयोजक	:	श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी, हरिद्वार एवं डॉ. अनिल आर्य, नई दिल्ली
यज्ञ के व्यवस्थापक	:	पंडित सूरतराम शर्मा जी
भजनोपदेशक	:	पंडित सत्यपाल पथिक एवं पंडित सुचित नारंग

बुधवार 9 मई से रविवार 13 मई 2018 तक प्रतिदिन

योग साधना	:	प्रात: 5.00 बजे से 6.00 बजे तक	यज्ञ एवं संध्या	:	सायं 3.30 बजे से 6.00 बजे तक
संध्या एवं यज्ञ	:	प्रात: 6.30 बजे से 8.30 बजे तक	भजन एवं प्रवचन	:	रात्रि 7.30 बजे से 9.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	:	प्रात: 10.00 बजे से 12.00 बजे तक			

ध्वजारोहण	- बुधवार 9 मई 2018 को प्रात: 9:00 बजे।
तपोवन विद्यानिकेतन का वार्षिकोत्सव	- बुधवार 9 मई 2018 को प्रात: 10 से 12 बजे तक
युवा सम्मेलन	- गुरूवार 10 मई 2018 को प्रात: 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
उद्बोधन	- आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य एवं आचार्य डॉ. धनन्जय जी
महिला सम्मेलन	- शुक्रवार 11 मई 2018 को प्रात: 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
संयोजिका	- श्रीमती सन्तोष रहेजा जी (दिल्ली)
उद्बोधन	- डॉ. अन्नपूर्णा, डॉ. सुखदा सोलंकी, श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा एवं श्रीमती सरोज आर्या जी आदि
शोभायात्रा	- शनिवार 12 मई 2018 को प्रात: 10 बजे तपोभूमि के लिये शोभायात्रा जायेगी
संयोजक	- श्री मंजीत सिंह जी
भजन संध्या	- शनिवार 12 मई 2018 को रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक
भजनोपदेशक	- श्रीमती मीनाक्षी पंवार एवं श्री कल्याण सिंह जी
स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह	- रविवार 13 मई 2018 को पूर्णाहुति के उपरान्त स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह मनाया जायेगा जिसमें दिल्ली के आर्यजन भारी संख्या में सम्मिलित होंगे तत्पश्चात ऋषिलंगर का आयोजन है।

नोट : यज्ञ के अतिरिक्त समस्त कार्यक्रम महात्मा प्रभु आश्रित सत्संग भवन में सम्पन्न होंगे।

बस सेवा: रेलवे स्टेशन से तपोवन आश्रम नालापानी के लिए हर समय बस उपलब्ध रहती है।

सप्रेम आमंत्रण

आदरणीय महोदय/महोदया, स्व. बाबा गुरुमुख सिंह जी एवं पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी, स्वामी योगेश्वरानन्द जी परमहंस एवं महात्मा प्रभु आश्रित जी ने तपोवन आश्रम को साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान माना था। आपसे प्रार्थना है कि परिवार व ईष्ट मित्रों सहित यज्ञ एवं सत्संग में उपस्थित होकर हमें कृतार्थ करें एवं अपने-अपने समाज/धार्मिक सत्संगों से यह निमंत्रण हमारी ओर से निवेदित करने की कृपा करें। आपके उदार सहयोग के लिए अग्रिम धन्यवाद।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, विनीश आहूजा, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, सुधीर कुमार माटा, मंजीत सिंह, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, मनीष बावा, महेन्द्र सिंह चौहान, योगराज अरोड़ा, विजय कुमार, रामभज मदान।

एवं समस्त सदस्य, वैदिक साधन आश्रम सोसायटी

De Bono

Saturn Series

CPU Holder

Slide out Keyboard tray

Swivel and Tiltable keyboard tray

Wire Management

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

DE BONO FLEXCOM (INDIA) LTD.: Kukreja House, 1st Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055
Ph : 011-23540721. 23533936 **Fax :** 23533944 **Email :** debono@debonoindia.com
E-mail : delite@delitekom.com

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2018-2020 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

With Best Compliments From MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बर्स बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर / फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण कराती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लांट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।
संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com